।। मन की राड ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ मन की राड ग्रंथ लिखंते ||

|| चोपाई ||

मन की राड सुणो सब सारा || बीतां दुख कहुँ सब म्हारा ||
अेसी मनवे मोसुं कीनी || अंतर मार बोहोत बिध दीनी ||१||

मेरी मेरे मन के साथ लढाई हुयी । वह सभी लोग सुनो । मेरे मनने मुझपे जो जो दु:ख बिताये वे सभी दु:ख तुम्हे मै बताता हुँ । इस मनने मुझे किसीको बताने पे भी समज मे नही आयेंगे ऐसे बहोत आंतरीक मार दिये है ।।।१।।

अेसा घेर लिया मुज तांई || मार पडे सिर बोलू नाई ||
सब ही बुध सुध बिसरावे || नेणा देख पाप मन ल्यावे ||२||

मेरे मन ने मुझको घेर घेर कर जो मेरे सिरपर मार दिये वे मार मै किसी को भी शब्दो मे बता नही सकता । मेरी आँखे देखनेका काम करती व देखनेमे कभी सुंदर स्त्री देखनेमे आती । देखते ही मेरा मन अपने उरमे उस स्त्री के प्रति विषय विकारोके पाप लाता व मेरी बुध्दी व सुध्दी विषय विकारोमे दौडकर विकारी कर देता ।।।२।।

मन की घात बोहोत करारी || झाणी लपट झपट वै लारी ||
बोहो बिध मनवो ठग ठग जावे || मेरे हात कबु नकिरावे ||३||

मुझे विकारोमे अटकाने के लिये मेरा मन मेरे साथ करारी याने किसीसे छुट नही सकते ऐसे दावपेंच खेलता । बुध्दी व सुध्दी को जल्दी ध्यानमे आयेगी नही ऐसे झिने-झिने न्यारे न्यारे दावपेंच मे मुझको झपटकर लपेट लेता मुझे यह मन विषय विकारोमे अनेक प्रकारसे ठग ठगके जाता । यह मेरा मन विषय विकारोको छोडकर कैवल्य ज्ञानमे मगन रहे ऐसा मैने कितना भी प्रयास किया तो भी वह मेरे हाथमे जरासा भी नही आता ।।।३।।

मै तो पचुं ब्होत बिध सोई || मेरे हात न बातन कोई ||
मो कुं लोप दिया छिन मांई || मेटी लाज पांच रस खाई ||४||

मै मेरा मन पापी विषय विकारोमे नही घुसे इसलिये तरह तरहके उपाय करनेमे पचता हुँ । फिर भी मेरा मन विषय विकारोमे पडता व मेरा एक भी उपाय या बात नही मानता । इसप्रकार मेरे मनको समझाने की एक भी बात मेरे हाथ मे रही नही । यह मेरा मन पल पल मे मेरी मर्यादा लोप देता है । मेरी लाज शर्म मिटाकर मगरुर बनकर शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध पांचो विषयोके पांचो रस पेटभर खाता है ।।।४।।

मो कुं गोता बे बिध देवे || मनवो जाय बिष घर लेवे ||
ब्हो बिध मो कूं घायल कीया || केता सुणता बिष रस पीया ||५||

मुझे मेरा मन बहोत प्रकारके विषयोके गोतोमे डालता है व विषयोके घर जाकर विषय रस लेता है । इस मन ने बहुत प्रकारसे मुझे घायल किया है । यह मन बोलते सुनते विषय रस पी जाता है ।।।५।।

कर आधीन चलावे सोई ।। ब्हो बिध रिण भके वे मोई ।।
चाह काम मन ले हेर उपावे ।। गुप्ती मार प्राण सिर खावे ।।६।।

यह मन मुझे अपने वश कराके चलाता है । अनेक प्रकारसे मुझे विषय विकारोमे पडनेके लिये लाचार कर देता है । मन को जिस कामकी चाहत उत्पन्न होती वैसी वह मेरे उरमे लहर उत्पन्न कर देता है । ऐसे ऐसे मै मनके अनेक गुप्त मार अपने सिरपर खाता हुँ ।।।६।।

अेसा बो बिध दु:ख दिराया ।। कब लग प्राण सहे मोहि काया ।।
मन वो जिद करे ब्हो भाई ।। मेरी बात न माने काई ।।७।।

ऐसे अनेक विधीसे मेरा मन मेरे प्राण व शरीरको दु:ख देता है । अब मेरा प्राण व शरीर दु:ख सहने मे थक गया है । यह मन मुझसे बहुत ही जिद्द करता है व मेरी विकारो से निकलनेकी कोई भी ज्ञान ध्यान की बात नही मानता ।।।७।।

हट कूं हाणु हिच कुं सोई ।। मन मरजाद न माने कोई ।।
कहियाँ बात ग्यान सुण लेवे ।। अंतर दिष्ट बिषे मे देवे ।।८।।

विषय विकारोमे लिपटे हुये मेरे मनको मै बहोत धिक्कारता हुँ,टोकता हुँ,सभी तरह के उपाय करता हुँ तो भी यह मेरा मन मेरी एक मर्यादा नही रखता । ज्ञान की बात बोलता हुँ तब ज्ञान सुनता परंतु अंतरदृष्टी विषयोमे ही रखता ।।।८।।

झीणी मनवो बोत उपावे ।। ग्यान ध्यान हे ठग जावे ।।
मनवे मोकूं ब्याकुल कीया ।। आठुं पोर संकट बो दीया ।।९।।

मुझसे यह मेरा मन विषय विकारो की झीणी झीणी बाते बहुतही उत्पन्न करता व मैने दिये हुये ज्ञान और ध्यानको ठग ठगके जाता । ऐसे इस विकारी मनने मुझे व्याकुल कर डाला । यह मन दिन रात आठोप्रहर बहुत ही कष्ट देते रहता है ।।।९।।

बो बिध राड़ कर मन सूं होई ।। बीतां बिना न माने कोई ।।
बाँझ नार कूं आण सुणावे ।। ब्यावर सुख दु:ख क्या पावे ।।१०।।

मै मेरे पापी मनसे अनेक प्रकारकी लडाई करता हुँ । यह बात जिसपर बिती है वही जाणता है । जिसपे यह मनकी लडाईकी बात बिती नही वह यह बात नही समजेगा । जैसे बच्चेवाली औरत बच्चे के सुख दु:ख बांझ स्त्री याने जिसे बच्चे कभी नही हुये ऐसे स्त्रीसे कितना भी समजाके कहने लगी तो भी वह बांझ स्त्री बच्चे वाले स्त्री के सुख दु:ख नही समजेगी । ।१०।

मन की राड लखे नहि कोई ।। जाणेंगे जे पूरा सोई ।।
मन की खबर जक्त कूं नाई ।। सब ही बंद्या मन घर माई ।।११।।

इस मनके लडाईको कोई भी जगतके नर–नारी ग्यानी ध्यानी नही समझ पाते । इसके लडाई को तो सतस्वरुप विचारके जो पुरे संत होंगे वे ही जानेंगे । इस मनके विकारी

प्रकृती की खबर संसारके लोगो को तो है ही नही । सभी के प्राण मनके विकारी वासनीक घरमे बंधे है यह संसारके लोगोको समझता ही नही ।।।११।।

----------||----------||

मन के हात सबे बिकावे ।। हिल मिल बिष खावे सुख पावे ।।१२।।

ये सभी संसारके लोग मनके हाथ बिक गये है । सारी दुनियाके लोग मनके साथ हिलमिल कर विषय रस खाते है व विषय रस का सुख भोगते है ।।।१२।।

में मन सूं मत न्यारा चालुं ।। मत के मते ना लीया ।।
जब मन वे समसेर संभाई ।। मो सुं बो जुध कीया ।।१३।।

मै मनके मतसे चला नही मनके मतसे न्यारा चला तब मनने मुझपर क्रोध कर तलवार उठाई व मेरे साथ भांती भांती प्रकारसे बहोत युध्द किया ।।।१३।।

आठु पोहोर बत्ती सुं घड़िया ।। जुध करतां दिन बीते ।।
मनवे बोत करारी मांडी ।। सइयेज हम सूं जीते ।।१४।।

मेरे उसके साथ आठोप्रहर बत्तीसो घडीयाँ युध्द करते करते दिन व्यतीत हो रहे है । इस मन ने बहुतही कड़ी लढाई मुझसे ठाण ली है । लढाईमे यह मन मुझे सहजमेही जीत जाता है ।।१४।

मेरी बात मांड मै भाखुं ।। इस बिध याले कीजे ।।
मन वो दुष्ट आण जब घेरे ।। नवा सूत फिर दीजे ।।१५।।

मै मेरे मनके सामने विकारोसे निकल लेनेकी कोई बात रखता हुँ व जिससे विकार वासना नही उपजेगी ऐसे उपाय करनेको कहता हुँ तो यह दृष्ट मन मेरी बात मानता नही । उलटा यह विकारी दृष्ट मन मुझे घेर घेर कर नये नये विकारी वासनाके रसमे अटकता है ।।।१५।।

मेरी बात चले नहि कोई ।। मन वे जीत्ता जावे ।।
हेला करूं बुंबडी मारूं ।। परत न पाछो आवे ।।१६।।

यह मेरे समजसे जरासाभी चलता नही व विकारी सुख मुझे देकर मुझे जीत जाता है । मै मन पर खीजता हुँ चिल्लाता हुँ फिर भी यह मेरा मन कुछ भी करने पर विषय वासनासे वापिस पलटकर नही आता ।।।१६।।

रिणी भाख बोहोत मै भाखी ।। परतन माने कोई ।।
माडाँ मुरड जाय जां बिषिया ।। पीये बोहोत अघाई ।।१७।।

मै,मन विषय विकारोसे वापीस आवे इसलिये मनके आगे बहुत लाचारी व गरीबीसे बोलता हुँ फिर भी विषय वासनाओसे निकलनेका मेरा कुछ भी नही मानता । उलटा जबरदस्ती से मुख मुरडाकर जहाँ विषय सुख है वहाँ जाता है और जाकर विषय रस पेटभर पिता है ।।।१७।।

जे तकरार करूं मै सामी ।। अेसा सूत चलावे ।।
देहि जळे आग बिन सारी ।। पाचुँ आण जगावे ।।१८।।

यदी मै मन से तक्रार कर मन का मानता नही तो मेरा मन शरीर को आग के बिना जलाता है और यह मन पाँचो इंद्रियोको भोग भोगने के लिये जगाता है ।।।१८।।

हुये भै भित बडे. तब माई ।। एक न माने काई ।।
ग्यान ध्यान सबी को लेपे ।। स्वारथ मंडे सगाई ।।१९।।

मेरी उससे हुयी वी जबरदस्त लडाई देखकर मेरा मन मेरेसे भयभीत हो जाता है व भयभीत होकर देहमे रोम रोममे घुस जाता परंतु विषयोसे निकलेनेकी मेरी एक भी बात नही मानता । मैने बताये हुये ग्यान ध्यान को लोप देता है व अपने स्वार्थ की याने विषय विकारोके रसकी मुझे सुवायेगी ऐसी बाते मेरे सामने मांडता है ।।।१९।।

काहा कहुँ मन बोहोत हरामी ।। येता सूत हलावे ।।
मूण्डे ओर पेट मे दूजी ।। अंतर मे सब खावे ।।२०।।

मै इस मनका क्या कहुँ यह मेरा मन बहोत हरामी है । यह मेरा मन विषयोके अनेक सुत कपट चलाता है । इस मनके मुखमे एक बात रहती है व पेटमे अलग बात रहती है । मतलब जगतके सामने बडी बडी ग्यान की बात करता है व अंतर मे विषय खाने की बात सोचता है व जा जाकर सभी विषय विकार खाता ।।।२०।।

पालु बोहोत ग्यान दुं सोई ।। अेहे बाता दुखा दीजे ।।
नरक कुंड मे जुग जे झूले ।। मन दे समझर रीजे ।।२१।।

मै मेरे मनको विषय वासनामे जानेसे अनेक प्रकारसे रोकता हुँ व विषयोको मारनेका कैवल्य वैराग ग्यान देता हुँ । जिस जिस विषय विकारी बातसे दु:ख होगा तथा युगान युग नर्कमे पड्कर दु:ख भोगेगा वे विषय वासनाये तथा उनके कुफळ बताकर ज्ञानसे समजाकर उनसे दुर रहने को कहता हुँ ।।।२१।।

मन दे कहे आगली किण ने ।। अब खंड सो मेरी ।।
आगे जाय देख कुण आयो ।। बात न मानुं तेरी ।।२२।।

मन कहता है आगे दु:ख पडेंगे नरक मिलेगा यह किसने देखा है । अभी वर्तमान मे जो सुख भोगुंगा वे ही मेरे है । आगे जाकर देखकर कौन आया है । इसलिये तुम्हारी नर्क मे पडनेकी बात मै नही मानता ।।।२२।।

मेरी बात मान रे भोरा ।। साच कंहु सुण लीजे ।।
ग्यान बिग्यान सकळ मै दाखुं ।। कहयो हमारो कीजे ।।२३।।

भोले मन मेरी आगे दु:ख पडेंगे यह बात मान । मै आगे दु:ख पडेंगे यह सत्य बात कह रहा हुँ । मै दु:खसे उबरकर सुखमे पडनेवाला ग्यान विज्ञान तुझे बताता हुँ व तू यह ग्यान विग्यान समज व मै कहता हुँ वैसा कर ।।।२३।।

अनंत क्रोड़ संतन की साखा ।। नास्केत ले आया ।।
दीसत अर्थ जग के माई ।। सुख दुख दोय कहाया ।।२४।।

मै तुझे अनंत कोटी संतोकी साक्ष देता हुँ । तु पुछ रहा है की नरककुंड कौन देखके आया तो सुण नासीकेतु सदेह यमपुरीके सभी नरककुंड देखके आया । खुले आँखोसे समजना है तो इस संसारमे सुख दु:ख दोनो भी प्रत्यक्ष दिखते है ।।।२४।।

कोढी हुवे कलंकी आंधो ।। आण तन मिले ना कोई ।।
पूरब जनम कमाया मनवे ।। अब भुक्ते इऊँ सोई ।।२५।।

पुर्व जन्मके पाप कर्म करनेके कारण इस जन्म मे कोढी हुये है,रक्तपिती हुये है,अंधे हुये है ये सभी इस जन्म मे पुर्व जन्म के किये हुये निच कर्मोके फल भोग रहे है ।।।२५।।

साची बात कहुँ मन सुण ये ।। कर्म कर रेवे सारा ।।
देव लोक कूं को कुण पूंथा ।। सुण रे मन हमारा ।।२६।।

अरे मेरे मन मै तुझे सच पुछ्ता हुँ की जो सभी प्रकारके बुरे कर्म करते रहता उनमे से आज दिन तक देवलोक मे कौन पहुँचा ? ।।।२६।।

बिषिया छाड आव सत माही ।। हर सरणागत रहिये ।।
मेरी बात मान सट मूरख ।। असत बात नहि कहिये ।।२७।।

अरे मन तु इन इंद्रियोके विषय रस छोड्कर सतमार्ग ग्रहण कर व हर के शरण मे रह । अरे शठ्मुर्ख मेरा यह कहना मान । अरे मन तु दु:ख पड्नेवाली झुठी विकारोकी बाते बोल मत । ।।२७।।

साची बिना सही नहि माने ।। आ सब ले धिरकारे ।।
समझ सट मन मान हमारी ।। जीती सार मा हारे ।।२८।।

सतमार्गके बिना रामजी मानेंगे नही । रामजी नीच विकारोमे रमनेवाले को धिक्कारते है । अरे शठ्मुर्ख मन तु समज व मेरी हर का शरणा लेने की बात मान । अरे मुर्ख मन जिससे तु जीत सकता ऐसा मनुष्य तन मिला व मोक्ष पहुँचाने वाले सतगुरु मिले जैसे किसी चौसर खेलनेवालोको चौसर जितनेका कभी तो भी भारी डाव हातमे आता व वह जीत जाता ऐसा बड़ा भारी जितने वाला डाव तेरे हाथमे आया उसको हातसे गमाकर हार मत ।।।२८।।

आद अंत मे सुण ले सारी ।। करणी बिना न तिरिया ।।
बिषिया भिरंग एक पल खाया ।। लख चोरासी फिरिया ।।२९।।

आदी से अंत तक सब देख ले । हर के शरण सिवा कोई भी नही तीरा । भृंगी ने स्त्री के साथ एक पल विषय भोग किया उसे एक पलके विषय भोगसे भृंगी त्रेचालीस लक्ष बीस हजार वर्ष तक लक्ष चौरांसी मे दु:ख झेलते घुमा ।।।२९।।

मनवा समझ ग्यान सुण भाई ।। हिये जोर न कीजे ।।

रावण बंध्यो गयो बिष बदले ।। चोर भागसी दीजे ।।३०।।

अरे मेरे भाई मेरे मन यह सत ग्यान समज व तु लक्ष चौरांशीके दु:ख पडेंगे ऐसा दु:साहस मत कर । विषय विकारोके कारण रावण का वध हुवा । जैसे कोई चोर चोरी करता है तब उसे अंधेरी कोठरी मे डालते है ऐसे ही निच विकारोमे कर्म करनेपे रामजी नर्ककुंड मे डाल देते है । ।।३०।।

सुनले काना हुय सचेतन ।। अे बातां दुख पावे ।।
सर्वर पाळ फूटगी भोळा ।। जळ क्युँ माय समावे ।।३१।।

अरे मन तु चेतन होकर ध्यान से सुन ले । इन विकार विषयोके बातोसे तु दु:ख भोगेगा । अरे भोले मन सरोवर की दिवाल फुट गयी तो सरोवर का पाणी सरोवर मे कैसे रुकेगा ऐसे ही निच कर्म करनेसे नरक मे पडनेका कैसे टलेगा ।।।३१।।

देवे लाय कुसळ क्युँ बंछे ।। खाय बिष क्युँ जीवे ।।
आक दूध थोहर रस भेळा ।। पै बदले क्युँ पीवे ।।३२।।

जैसे कोई घरको भारी आग लगा देगा व सुख मिलने के लिये सभी सुख देनेवाली वस्तु राख नही होना यही चाहेगा तो यह कैसा होगा । आग लगाई है तो आग सुख की वस्तु हो या दु:ख की वस्तु हो सभी को भस्म करेगी । कोई जहर खायेगा व मृत्यु नही आवे ऐसा सोचेगा तो जहर खाया हुवा जिवीत कैसे रहेगा । अरे मन अमृत के सरीखे गाय भैसके दुध के जगह प्राण लेयेंगी ऐसे रुई तथा निवडुंगा के पेड का जहरीला दुध क्यो पिना ।।।३२।।

बिषिया रस कबु नकिराछा ।। सुण सट मन हमारी ।।
सब जग बंध्यो विष की बेली ।। मार पड़े सिर भारी ।।३३।।

अरे मुर्ख मन ये विषयरस कभी भी अच्छा नही है । ये सभी संसार विषय की बेलसे बंधे हुये है । इस विषय रसके कारण जीव के मस्तक पर संसार मे भारी मार पडते रहता है ।।।३३।।

जग कूं देख अर्थ कर लीजे ।। क्या सुख पावे लोई ।।
बिष की सीर पीव कर अमर ।। देख जगत सब कोई ।।३४।।

अपने अपने विषय कर्मोके प्रमाण से जीव कैसे कैसे दु:ख संसार मे भोगता रहता है यह इस संसार के जीवोके दु:खोको देखकर अर्थ लगा ले । अरे जीव इस संसार मे आज दिन तक विष की सीर पीकर कोई अमर हुआ है क्या यह भी देख ले ।।।३४।।

बिषिया पियो राज बिराणा ।। बो बिध हर्ष मनावे ।।
इण मे मुगत गत्त जो होती ।। जग परळे क्युँ जावे ।।३५।।

जो राजे महाराजे विषय रस मे मग्न रहे थे उनके राज हाथसे छुट गये थे व उनके राज्य दुसरोके राज्य हो गये थे । अरे मन तु विषय सुखोमे बहुत ही प्रकारसे हर्ष मनाता है ।

यदी इसमे सुख देनेवाली गती,मुक्ती हो जाती तो यह संसार के लोग दु:ख मे क्यो जाते ।।।३५।।

समझ समझ मन मान हमारी ।। दे बिषिया छिटकाई ।।
समरथ स्याम मुगत को दाता ।। इम्रत पियो अघाई ।।३६।।

अरे मन तु समझ और समझकर मेरी सुन । अरे मन यह विषय वासना छोड दे और समर्थ स्वामी जो मुक्ती के दाता है उनके नामका नामामृत पेटभर पी ।।।३६।।

बिष कूं छाड अमर हुवा जग मे ।। सो मे तोय बताऊँ ।।
चित्त मन धार सुरत सो दीजे ।। हेला कर नित जाऊँ ।।३७।।

संसार मे विषय विकार छोड्कर जो जो अमर हुये उनके दाखले तुझे देता हुँ । वे दाखले तु चित्त मन व सुरत लगाकर सुन । मै तुझे नित्य ज्ञानके शब्द सुणाता हुँ । फिर भी समजता नही इसलिये तेरे पे चिड आती है ।।।३७।।

परमारथ काज उचारूँ ।। भूला गेल बताये ।।
तुंहि कर भुगतसी तुंहि ।। ताते समझ कर रहिये ।।३८।।

मै परमार्थ याने तुझपे दु:ख नही पडे इसकारण तुझे ज्ञान बता रहा हुँ । जैसा कोई रास्ता भुल जाता उसे रास्ता बताना चाहीये ऐसाही तु अमर होनेका रास्ता भुल गया इसलिये ग्यान देकर तुझे समजा रहा हुँ । जो जैसा करेगा वैसा वह भुगतेगा यह तु तेरे उदरमे समज ले । ।।३८।।

गोपीचंद भर्थरी गोरख ।। काग भुसंडी कहिया ।।
जाजुळ दत्त दिगम्बर बिष तज ।। अबंचळ जग मे रहिया ।।३९।।

गोपीचंद,भर्तरी ये मामा भांजे थे । ये दोनो राजे थे । उन्होने विषय विकार त्यागकर अमर होनेका योग धारण किया था जिससे वे चौरांसी लक्ष योनीमे न पड्ते महाप्रलय तक अमर हो गये । कागभुसंडी,जांजुली ऋषी,दत्त डिंगबर इन सभीने विषय रस त्यागा व ब्रम्ह योग धारण कर जगमे अमर बन गये ।।।३९।।

बिषिया छाड साचा सुं सिधा ।। अनंत क्रोड रिष राई ।।
सत्त के कारण पांडव जीता ।। केरूं गया बिलाई ।।४०।।

अरे मन अनंत कोटी ऋषी व राजाओने विषयरस त्यागन कर सतका मार्ग धारण किया जिससे वे सभी ऋषी व राजाये सत के देश सिधाये । कौरव व पांड्वो मे लढाई हुयी जिसमे पांड्वोका याने सत का विजय हुवा व कौरव याने असत की हार हुयी ।।।४०।।

सत्त की बात सत्त कर माने ।। इण मे झूठ न कोयी ।।
जन प्रहलाद नाम के सरणे ।। जीत गयो जुग लोई ।।४१।।

अरे मन सतकी बात सत ही होती है उससे झुठ कभी नही निपजता । संत प्रल्हाद नामके शरणमे जानेसे संसारमे राक्षसोसे अरु बरु न लढते हुये भी राक्षस लोगोसे संसारमे जीत

गया । ।।४१।।

एक दोय की काहा बताऊँ ।। लेखे बिन अपारा ।।
बिषिया छाड मिल्या सुख सागर ।। सुणरे मन हमारा ।।४२।।

अरे मन मै एक दो की क्या दिखाऊ ?इस प्रकार सुख सागर मे मिल गये उसका हिसाब नही है । हिसाबके परे अगणीत है । ये सभी विषय रस त्यागकर सुख सागर मे मिल गये । ।।४२।।

सुखदेव कत्तर शाम सुण लछमण ।। हणवंत गरूड़ कहाया ।।
गोरख छाड़ भया जग अमर ।। जंवरे हात न आया ।।४३।।

कार्तीक स्वामी,सुखदेव बाद्रायणी,लक्ष्मण,हनुमान,गरुड,गोरखनाथ इन सभी छःजतीयोने विषय त्यागकर सत का शरणा लिया जिससे ये सभी जती यमराज के हाथोमे न जाते अमर हो गये। ।।४३।।

बड़ा तिथंकर करणी सारा ।। जग तज न्यारा हूवा ।।
आगे किया दिया सब बदला ।। अब कर्मा सूं जूवा ।।४४।।

ये सभी बडे बडे तिर्थकर राजपाट त्यागकर विषय विकार मे जगतसे न्यारे हुये व पुर्वके किये हुये सभी काल कर्मोके बदले चुकाकर केवली हुये । याने कर्मो से न्यारे हुये ।।।४४।।

भुगत्या सबे आगला सारा ।। अब बिष पिये न कोई ।।
मिलिया जाय ब्रम्ह के मांही ।। साख भरे सब लोई ।।४५।।

इन तिर्थकरोने पुर्व जन्मसे अपने विकारोके किये हुये कर्म देख देखकर मिटा दिया व अब वे दु:ख पहुँचानेवाले कर्मो के डरसे कोई भी विषयरस लेते नही । वे सभी कर्म शुन्य कर ब्रम्ह मे मिल गये । ये तिर्थकर केवल पाकर ब्रम्ह मे मिल गये करके जगत के सभी ग्यानी ध्यानी साक्षी भरते है ।।।४५।।

करणी करे नरक नहि डूबा ।। जंवरे काळ न खाया ।।
सुण मन साख आगली सारी ।। अनंत रिष की भाया ।।४६।।

ये तिर्थकर बुरे कर्म कर नर्क मे डुबे नही याने इनको जम ने खाया नही । अरे मन आज तक अनंत ऋषी हो गये वे सभी जमसे कैसे उबरे यह उनकी साक्ष सुण ।।।४६।।

गीता बेद पुराण पुकारे ।। भागवत सुखदेवा ।।
कपल मुनि बाष्ट सिव सेसा ।। सुण मन सब का भेवा ।।४७।।

गिता,वेद,पुराण,भागवत,सुखदेव,कपीलमुनी,वशिष्ठमुनी,शिव,शेषनाग इन सभीके ग्यान सुण । ।।४७।।

सब की साख ग्रंथ सुण लीजे ।। बिषिया सब बिसराया ।।
ग्यान ध्यान सज जोग जुगत गत ।। नाव सबे मन भाया ।।४८।।

इन्होंने ज्ञानमे विषय रस बुरा है यह साक्ष भरी है । इन सभीके मनमे ज्ञान,ध्यान,योग, नामस्मरण आदि करके संसार से मुक्ती पानेका ही रस्ता भाया है ।।।४८।।

जुगे जुग मे संत पुकारे ।। भीड़ पड़या रिष सारा ।।
कर्णी आण सबे मु दाखे ।। सुण ये सिरजण हारा ।।४९।।

सभी युगोमे ऋषी व संत संकट पडने पे सिरजनहारको याद करते है व जगत को याद करने को कहते है । भिड पडने पे अच्छे अच्छे कर्म करो,अच्छा धर्म करो ऐसा ये सभी कहते है । ।।४९।।

भीड़ पड़े बोहो संकट सरीरा ।। बिषिया याद न आवे ।।
करणी धर्म नाँव जुग सारा ।। सब ही आण बतावे ।।५०।।

जब सुलझेगा नही ऐसा भारी संकट पडता है तब किसीको विषय की याद भी नही आती । तब अच्छे कर्म करो,धर्म करो,नामस्मरण करो यही जगत के संकट से निकलने के लिये लोग ज्ञानी,ध्यानी उनको आ आकर समजाते व वे भी अच्छे धर्म,कर्म,नामस्मरण करते । ।।५०।।

चोड़े अर्थ जग के माही ।। सुण मन समझ अयाना ।।
तस्कर चोर चुगल जग कहिये ।। जाहाँ सुख काहां कहांणा ।।५१।।

अरे नादान मन जो संसारमे तस्कर,चोर और चुगली करनेवाले चुगलखोर इनको कही भी सुख मिलता है ऐसा कोई कहता है क्या?इनको संहार मे जहाँ तहाँ दु:ख ही दु:ख है यही खुल्लम खुल्ला दिखता ।।।५१।।

नट खट चोर बावरी जुग मे ।। पासी गर सुण थोरी ।।
बेईमान केता जग माही ।। को माया किण जोड़ी ।।५२।।

अरे मन इस संसारमे दुजोको तकलीफ देनेवाले नटखट,चोर,शिकार करनेवाले बाबरी,फासीगर हिसंक थोरी बेईमान बहोत होते है उनमेसे कोई माया जोडकर धनवान हुये है क्या यह तु बता । ।।५२।।

सउकार साच जग बिणजे ।। अगल उगल नहि कोई ।।
तांके धन लाख पर दीयो ।। धजा फरूके सोई ।।५३।।

साहुकार संसार मे सच्चा व्यवहार करते व दगाबाजी,झुठ,बेईमानी ऐसा व्यवहार कुछ भी नही करते उनके घरमे लाखो रुपयोका धन आता । रुपयोके अनुसार उनमे दिपक से लेकर ध्वजा तक फरकते ।।।५३।।

देवे धन आपको पेली ।। गरज सकळ की सारे ।।
उजियागर क्रोड़ी उण गेले ।। सणमुख धणी बिचारे ।।५४।।

अरे मन साहुकार संसारके लोगोकी उनकी जरुरत पुरी होनेके लिये प्रथम घरसे धन निकाल कर देते है व उनकी गरज पुरी करते है ।।।५४।।

अरब खरब धन अपारा ।। छेड़ो पार न आवे ।।
सत्त की बात देख जग माही ।। चवड़े साहा कहावे ।।५५।।

इन साहुकारोके घर अरब खरब मतलब गिणणे गये तो पार नही आता इतना अपार रहता । अरे मन यह सत्य की बात देख की वे सभी संसारमे खरा व्यापार करके सत्य चले है । इसलिये जगतमे चौडे बजाकर सावकार कहे गये ।।।५५।।

राजा राव रंक सुलताना ।। पातसाहा जग माही ।।
सत्त की बात साहा मुख दाखे ।। मन सब जाचण जाही ।।५६।।

जगतमे राजा,साहुकार,रंक ,चोर,बादशहा ये सभी रहते है । साहुकार सतके योगसे धन मिलता है व अपना मुख जगतको चवडे दिखाता है व चोर अपना मुख जगत से छुपाता है। अरे मन जगतके सभी लोग सावकारके पास कर्ज मांगने जाते है वे चोरके पास नही जाते । ।।५६।।

सत्तु कार बांढे जग भारी ।। अनंत जीव सुख पावे ।।
सत्त की बात देख मन जग मे ।। प्रगट नेण दिखावे ।।५७।।

ये साहुकार जगत मे भारी भारी सत्कार प्राप्त करते है । उनके धन देनेके स्वभावसे अनंत जीव सुख पाते । अरे मन यह सत की बात इस संसारमे प्रत्यक्ष आँख से दिखाई देती है । जगतके आँखोसे छुपी नही है ।।।५७।।

प्रगट ग्यान बताऊँ तोने ।। भर्म न राखुं कोई ।।
सरग नरक भूलोक पताळा ।। युँ कर पुँछे सोई ।।५८।।

अरे मन मै तुझमे कोई भी भ्रम नही रहेगा ऐसा ग्यान प्रगट रुपसे बताता हुँ । स्वर्ग,नर्क ,पाताल ,मृत्युलोक मे अलग अलग लोक पहुँचते है ।।।५८।।

चोरी जारी बिषिया खाया ।। जग मे कोण सरावे ।।
सदा बर्त केताईक दीया ।। साहा पद मन कूं पावे ।।५९।।

चोरी करते,जारी करते,विषय भोगते ऐसे लोको की संसार मे कभी शोभा होती है क्या? इन चोरी,जारी करनेवाले किसी मनुष्य ने कभी सदावर्त रखा है क्या? इनमे कितनोने दान धर्म किया?चोरी जारी करनेवाले कितने लोकोको जगतने जगतमे सावकार पदवी दी है । अरे मन यह समज ।।।५९।।

पेकंबर ओर पीर अवलिया ।। फिर अवतार कहाया ।।
बिषिया छाड़ तज्यो जग सारो ।। तबे मुगती घर पाया ।।६०।।

अरे मन जगतमे अनेक पैकंबर पिर अवलियाँ याने संत व अवतार हुये । उन्होने पहले जगत के सभी विषय रस त्यागे तब उन्हे सुख का मुक्ती घर मिला ।।।६०।।

देव लोक मे देवत सारा ।। यां सुं सब चल जावे ।।
करणी करे छाड़ सब बिषिया ।। देवत जाय कहावे ।।६१।।

देव लोक के सभी देवता मृत्यु लोक से चलकर जाते । वे इस मृत्यु लोक मे विषय रस त्यागते व यहाँ अच्छे कर्म करके देवलोक सिधाते ।।।६१।।

सत्त की बात पकड़ जिण साधी ।। सब कूं दर्शण दीया ।।
बिषिया माय जगत सब झूले ।। को किण सरणे लीया ।।६२।।

अरे मन सत की बात समजकर जिसने साधा है इन सभीको हरीने दर्शन दिये है और विषय भोगमे जो संसार झुल रहा है उन्हे हरीने शरण मे लिया है क्या यह बोल ।।।६२।।

बिषिया बुरा भला मत जाणे ।। रे मन समझो मूवा ।।
गोतम घरे इन्द्र चन्द आया ।। रूम रूम भग हूवा ।।६३।।

यह विषय रस लेना बहुत बुरा है । इसको बहुत अच्छा मानो मत । अरे मुर्दे मन तु समज । गौतमके घर पे कपट खेल कर इंद्र व चंद्र विषय रस लेने गये जिससे इंद्र के शरीरपर दर्द देने वाले एक हजार भग प्रगटे ।।।६३।।

देव लोक मे अे सुख भारी ।। बिषिया चरे अपारा ।।
ताते आण पड़े भू उपर ।। जनम धरे लख सारा ।।६४।।

देवलोक मे स्त्रि संगका भारी सुख है । वहाँ अनेक प्रकारके विषय सुख चलते है । उन भोगोसे देवलोक के देवता भुलोक पे चौऱ्यांसी लक्ष योनी के दु:खमे आ पडते है ।।।६४।।

परले आण पड़े जग माही ।। फेर मार सिर खावे ।।
जंवरे हात बिकावे मन रे ।। बंद्या जमपुर जावे ।।६५।।

देव लोक मे विषय सुख भोगनेका आयुष्य खतम होनेके बाद जीव भुलोक पे आकर गिरता व यहाँ पाप कर्मोके मार सिरपर खाता । ये जीव यमोके हाथ बिकता व उसे दु:ख भोगवाने यम बांधकर यमपुरी ले जाता ।।।६५।।

सुण मन समज साच गह लीजे ।। भांत भांत समझाऊँ ।।
गुर प्रताप समझ मे पाई ।। तुज हेला दे जाऊँ ।।६६।।

अरे मन तु सुन व समझकर जो सही है उसे ग्रहण कर । तेरे समझमे आने के लिये मै तुझे भांती भांतीसे समझाता हुँ । गुरु प्रतापसे मुझे समझ आयी है वह समझ मै तुझे भी जोर देकर समझाना चाहता हुँ ।।।६६।।

खोटी नीत बाळी घर जातो ।। करे तो बड़ी अनीती ।।
तां कूं पटक मारियो छिन मे ।। हिर्णा कुश के घर बीती ।।६७।।

खोटी विकारी नितीसे बाली सुग्रीव के घर बडी अनीती करने गया था । उसे जमीन पे पटकपटक कर पलोमे मार दिया । हिरण्यकश्यपु के घर भी यही हुवा । हिरण्यकश्यपुने देवकन्या कयाधु को हरण कर घरपे लाया । उससे कयाधु को पुत्र प्रल्हाद जन्मा । प्रल्हाद के भक्तीके प्रताप घरमे नरसिंह प्रगट हुवा व हिरण्यकश्यपु को नष्ट किया ।।।६७।।

भसमी आण करी बोहो सेवा ।। मन धर बिष की बाता ।।
भसमी कडो लियो छळ हाते ।। सुण दुष्टि की वा ताता ।।६८।।

भस्मासुर ने मनमे पार्वती को हरण कर पत्नी बना लेना व उसके साथ विषय वासना भोगना इस खोटी नितीसे महादेव की सेवा की व महादेव को प्रसन्न कर लिया । व छलसे महादेवसे भस्मीकडा प्राप्त कर लिया । उसकी बात सुण ।।।६८।।

ऊहि मूवो मारियो हर ने ।। भसम कियो उण तांई ।।
बेईमान बिषे रस पीया ।। जीत जग नहि जाई ।।६९।।

विष्णुने मोहीनी का रुप धारण कर भस्मासुर से बोली मै आ गई हुँ । अब तु जैसे महादेव मेरे सामने नाचता था उसी तरह तु भी नाच । भस्मासुर नाचने लगा । मोहीनी बोली माथेपर हाथ रखकर घुम घुमकर नाच तो मै खुष होऊँगी । कडा सरपे फिरते ही भस्मासुर भस्म हो गया । इसप्रकार यह भस्मासुर विषय वासना से मरा । इसप्रकार बेईमान कपटी लोग विषय वासना पिते उनमेसे कालसे जितकर कोई नही जाते ।।।६९।।

राकस हुवा बुध का हीणा ।। बो बिषिया रस खाया ।।
नेकी छाड़ बदी वा कीनी ।। किणे मोख फळ पाया ।।७०।।

सभी राक्षस हिनबुध्दीके हुये,विकारी बुध्दीके हुये । इन राक्षसोने बहुत विषय रस खाया । निती छोडकर अनितीसे संसारमे रहे । इन राक्षसोमे किसी भी राक्षसको मोक्ष फल मिला क्या? ।।७०।।

सब ही मूवा गया युँ परळे ।। बार न बुंब न कोई ।।
मनवा समझ कहुँ मै तोसुं ।। बिषिया मोख न होई ।।७१।।

इस विषय वासनाके चलते सभी राक्षस नरकमे पडे । उनके पिछे किसीने भी दु:ख नही जताया । अरे मन इस विषय वासना से कभी भी मोक्ष मिलनेवाला नही ।।।७१।।

छाड़ छाड़ मन सबे बिकारा ।। का हार हो मुरझाइ ।।
बिरिया थकी चेत मन मूरख ।। ओसर जाय बजाई ।।७२।।

अरे मन ये सभी विकार छोड । अरे तु विकार छोडनेके लिये उदास होकर क्यो रहता है । अरे मन समय है जबतक चेत जा । अरे यह मनुष्य देह का अवसर जा रहा है । यह अवसर तुझे चेत जाने के लिये बजा रहा है फिर भी तु चेत नही रहा है ।।।७२।।

आज काल करता दिन बीचे ।। कायर ओला खावे ।।
करणा व्हे बेग कर लीजे ।। गया दिन नकिरावे ।।७३।।

आज करुंगा,कल करुंगा ऐसा करते दिन व्यतीत हो रहे है । लडाईसे डरनेवाला कायर जैसे कल जाऊंगा,कल जाऊंगा ऐसे कोई ना कोई कारण बताके लडाई जानेसे छुपते रहता है वैसा मेरा मन छुप रहा है । अरे मन जो भी करना है वह जल्दी कर ले । गये हुये दिन फिरसे वापीस हाथमे नही आते यह समझकर आज ही कर ले ।।।७३।।

सोदो सगपण करे बुहारा ।। ढील पड़े नकिराछो ।।
भिच की आण पड़े को मांही ।। रिग पिच हुवे मन पाछो ।।७४।।

सौदा करना,सगाई करना या बडे व्यवहार करना इनमे ढिला रहना अच्छा नही है । कोई आकर बिचमे विघ्न डाल देता है । व अपना या सामने वालेका मन ढ्रिग पिच हो जाता है व अस्सल नफे वाला व्यवहार नही बन पाता है ।।।७४।।

लाला आण मिले तिण बिरिया ।। हिंथे सोच बिचारे ।।
ढील पड्या सिर बहन काई ।। ज्यो फेंके सो मारे ।।७५।।

जिस समय विषय विकार त्यागने की व सत बात पकड्नेकी चाहणा होती है तब ही हृदय मे विचार कर विषय विकार त्यागकर सत बात पकड लेनी चाहीये । जैसे लडाईमे तलवार या बाण चलानेमे जो ढिलाई करता है उसका चलाया हुवा बाण शत्रु होशीयार हो जाने कारण शत्रुके किसी सैनिक पर नही चलता । शत्रु होशीयार होनेके पहले जो बाण चलायेगा वही शत्रु को मार सकेगा ।।।७५।।

सजिये कटक राड़ नहि हूणा ।। करसण अकल बिगाडे ।।
चोर जार दुस्मण गह लीजे ।। ढील पड़े नहि बाड़े ।।७६।।

चोर या दुश्मन पकड्ने मे देर कर दी तो कितनी भी फौज सुसज्जीत रही तो भी चोर या दुश्मन पकडे नही जाता । जैसे खेती करनेवाला किसान अक्कल रखकर खेतमे समयपर न बोते मुर्ख बनकर बेसमय बोता परिणामत: उसकी फसल बिगड जाती इसीप्रकार ढिल हो जानेपे व्यभिचारी व दुश्मन पकडे नही जाते ।।।७६।।

मन दे समज कहुँ तुज ताई ।। जग दिष्टांग बताऊँ ।।
ढील पडयाँ मे हुवे अकाजा ।। ताते सुण केह जाऊँ ।।७७।।

हे मन देवता तु समज । मै तुझे संसारके दृष्टांत बताता हुँ । कोई भी उँची चिज हासील करने मे ढिल करनेपे नुकसान होता है । इसलिये मै तुझे विषय विकार त्यागनेमे व सतज्ञान धारण करनेमे ढील मत कर यह कह रहा हुँ ।।।७७।।

मोसर जाय नीर ज्युँ सिलता ।। पाछे रहे न कोई ।।
लोहो को ताव बीज को झब को ।। जाता बार न होई ।।७८।।

जैसे नदीका पानी बहकर चले जाता है वह बहकर गया हुवा पानी पुन: वापीस नही आता वैसे ही जो उम्र गयी वह पु:ना वापीस नही मिलती । मनुष्य देहका अवसर निकल जानेपर हाथमे कुछ नही रहता जैसे लोहारका लोहे को दिया हुवा ताव जानेको देर नही लगती । जैसे बिजली का झबका देखते देखते चले जाता ऐसे मनुष्य देहके सांस खतम होनेको देर नही लगती । ।।७८।।

केती बिरा गयो तुं परले ।। जूण अनंता धारी ।।
बिषिया खाय रंज्यो नहि कोई ।। सुण मन सीख हमारी ।।७९।।

अरे तु कितनी बार चौरासी लाख योनीमे गया व तुने कितने ही बार विषय भोग लेनेवाली काया धारण की । हर कायामे भरपुर विषय भोग किया फिर भी तु विषय भोगसे तृप्त नही हुवा । अतृप्तका अतृप्त ही रहा व विषयतृप्तीके लिये योनी योनीमे जाकर जन्म मरनेके दु:ख भोगते रहा । अरे मन तु मेरा उपदेश सुण । तु विषय रस त्यागकर सतज्ञान धारण कर ।।७९।

केती बार हुवे सी सिकरो ।। जंबुक रोज कहाणो ।।
बिषिया बिना रयो नही वाही ।। खायर नाय अघाणो ।।८०।।

अरे मन तु कई बार सिकरा हुवा कई बार कोल्हा हुवा व कितनेही बार रोही हुवा व जीस योनी मे गया वहाँ विषय रस पिये बिना नही रहा फिर भी आजतक विषय रस से तृप्त नही हुवा । ।।८०।।

कीट पतंगा पसू पखेरूं ।। लाख इकावन कहिया ।।
अेती देहे सबे ते धारी ।। जाहाँ ताहाँ बिषे रस पीया ।।८१।।

तु कीट हुवा,पतंगा हुवा,पशु हुवा,पक्षी हुवा ऐसे सभी इक्कावन लाख शरीर धारण किये व जिस जिस योनी मे गया वहाँ विषय रस पिया । फिर भी तृप्ती नही पाया ।।।८१।।

मनवे देहे धरी ते केती ।। लेखे बिन अपारा ।।
च्यार लाख तुं जात कहाणो ।। जनमा वार न पारा ।।८२।।

तुने आजतक कई बार मनुष्य देह धारण किये उनकी गिणती करते तो गिणती नही करते आती । मनुष्य की चार लाख जाती की योनीयाँ है ऐसा कहते है उस सभी जाती मे तु जन्मा व विषयरस भोगा फिर भी तृप्ती नही पाया ।।।८२।।

राजा होय बोहोत बिष पीया ।। क्रास पास संग राणी ।।
हाकम सेठ सबे हुय आया ।। मनछा नाय पुराणी ।।८३।।

जब तु राजा हुवा था तब तेरे साथ अनेक राणीयाँ,दासीयाँ,पासवान थी । तुने उन सभी के साथ विषयरस लिया । तु हाकम हुवा,सेठ साहुकार हुवा ऐसे सभी प्रकारके मनुष्य देह धारण करके आया व हर देह मे भरपेट विषयरस पिते आया फिर भी तेरी विषयरस पीने की मनिषा ताजी के ताजी है पुराणी नही हुयी ।।।८३।।

किसबण बोहोत वेशिया दासी ।। राम जन्या संग गायो ।।
भड़वो होय रयो इण माही ।। बिषिया धाप न आयो ।।८४।।

तु भड्वा बनकर अनेक वेश्याओके साथ रहा । दासीयोके साथ रहा रामजन्या के संग रहा व जहाँ वहाँ विषय रस पिया परंतु विषय रससे धापा नही ।।।८४।।

छाळी बोहोत सेंकड़ा मांही ।। तोय बोकड़ो कीयो ।।
सांपे मांय सांड की बिरिया ।। बिषे जुगे जुग पीयो ।।८५।।

सैकडो बकरीयो मे तुझे बकरा बनाया । गायोके झुंड मे तुझे सांड बनाया इस प्रकार योनी

योनी मे युग युगसे विषयरस पिता आया परंतु विषयरस से धापा नही ।।।८५।।

पारे वो होय पलक न बिछडयो ।। गज संग बोहोत बताई ।।
बिषिया खाय रंज्यो नहि कोई ।। पड़यो खाड मे आई ।।८६।।

कबूतर होकर कबूतरनी से पलभर भी अलग नही रहा । अनेक हाथीनीयोके साथ हाथी बनके रहा व विषय रस पिते रहा । हाथी योनीमे विषयरस के उन्माद मे खड्डे मे पडा फिर भी तू विषय रस से धापा नही ।।।८६।।

चोरी जारी बोबिध कीवी ।। लेखे बिना अपारा ।।
धायो नहि हुवो नहि पूरण ।। बिषिया छेह न पारा ।।८७।।

तू चोरी जारी याने छुप छुप कर गिणते नही आता ऐसे अपार बार विषय रस पिया फिर भी तू कभी भी तृप्त नही हुवा । तू समज विषय वासना का अंत नही आता ।।।८७।।

लगती लाय डाळे मे लाकड़ ।। दूणी अंच लखावे ।।
पाणी बिना बुझि नहि कोई ।। कोट जतन कर जावे ।।८८।।

आग लगी है और इस आगमे लकडी डालते ही रहे तो आग कभी बुझेगी नही दुगुणी आग भड्केगी । यह आग पानी के बिना बुझनेवाली नही है । सालो गिणती करोडो प्रयास किये तो भी पानी के बिना लकडीयाँ डालके आग बुझेगी नही ।।।८८।।

ज्युँ ज्युँ फूस कचोड़ो डारे ।। त्युँ बो हुवे भै भीता ।।
मनवा समझ मान जड़ मेरी ।। लाय जळत जुग बीता ।।८९।।

आग बुझाने के लिये घास कचरा जैसे जैसे डालेगा वैसे वैसे आग भयंकर होती । इसलीये अरे मेरे जड मन तु समज व मेरा मान । कामग्नी कामसे ही कामाग्नी को बुझाना चाहता है परंतु ये कामाग्नी जैसे आग मे कचरा लकडी डालनेसे आग शांत नही होती वैसे इस कामाग्नी की काम रस से उसकी कामाग्नी शान्त नही होती । अरे मन यह कामाग्नी सिर्फ कैवल्य ज्ञानसे राख होती ।।।८९।।

इण बिध बुझे कदे नहि भाई ।। असंख जुग होय जावे ।।
पाणी डार फूस कर दूरो ।। वहाँ की वहाँ बुझावे ।।९०।।

इस प्रकार से आग कभी भी बुझनेवाली नही हैं । आगमे कचरा फुस लकडा डालते रहें तो वह आग असंख्य युग व्यतीत हो जाने पे भी वह बुझेगी नही । फुस लकडी डालना बन्द कर दिया व पानी डाला तो आग वही के वही बुझ जायेगी । इसी प्रकार कामाग्नी कामसे शान्त नही होगी । वह कैवल्य सत्तज्ञान प्राप्त करनेसे विना विलंब राख हो जायेगी ।।।९०।।

बिषिया पीत धापसी नाही ।। सुण तुं अेकरेनाणा ।।
ताते बेग उपाय करीजे ।। दूरा देस पयाणा ।।९१।।

अरे मन तु विषय रस पिते पिते धापेगा नही । अरे मन तुझे दूर देश जाना है इसलिये

जल्दी उपाय कर ।।।९१।।

जुग जुग मे किया बिहारा ।। नाना बिध ब्हो भांती ।।
केती भूक गई मन तेरी ।। मै पूछुं कर खांती ।।९२।।

तूने युगो युगो से नाना प्रकारसे भोग विहार किये फिर भी तेरी भूख कितनी गयी यह मै तेरे विषय रस के अतृप्त स्थिती का विचार करके पुंछ्ता हुँ ।।।९२।।

लख चोरासी मांय भटकियो ।। पीया बिष अपारा ।।
केती भूक गई हे तेरी ।। सुण मन भाख बिचारा ।।९३।।

तू चौरांसी लाख योनीयो मे भटका व उन योनीयो मे जहाँ जिस योनी मे गया वहाँ अपार विषय रस पिया । इतना विषय रस पिने के बाद भी तेरी कितनी भूख गयी यह तू मन विचार करके मुझे बता ।।।९३।।

तोही लाज सरम नहिं हे तो कूं ।। फीटो पाड़यो पड़े न कोई ।।
कूटत पीट बोहो जुग बीता ।। निसडो लाज न होई ।।९४।।

तो ही तुझे लाज शरम नही है । तू फिटा कुछ पड्ता नही तुझे मारते मारते अनेक युग व्यतीत हो गये । तु बेशरम है । तुझे जरासी भी शर्म नही है ।।।९४।।

पड़े गुड़े ऊठ संभाळे ।। निसड़ो फिर वाही कूं झूंबे ।।
मुवो सबे कबेलो पचरे ।। उन ही कूं सुत चूंबे ।।९५।।

बेशर्मा तू गिरता फिर उठता व उठकर सम्हलकर खड़ा रहता और फिर बेशर्म बनकर उसे ही झोंबता ।।।९५।।

अंधो पडे अंध की लारा ।। खाड़ खुह नहि सूजे ।।
ज्युँ मन समझ जाय जुग परले ।। सत्तगुर बिना न सूजे ।।९६।।

अंधा मनुष्य अंधे के पिछे जाकर गड्ढे मे गिरता है । दोनो अंधे होने कारण दोनो को खड्ड़ा खोह दिखाई नही देता । इसी प्रकार मन तू समझ । यह संसार प्रलय मे जा रहा है । काल के दु:ख मे पड रहा है । सतगुरु के बिना किसीको नही सुझता ।।।९६।।

तांते कहुँ समझ कर लीजे ।। मै प्रमोद बताया ।।
येती बिरा हुई मो केता ।। कुछ तेरे मन भाया ।।९७।।

इसलीये मै जो कहता हुँ वह तू समज । मै तुझे बहोत समयसे सतज्ञान का उपदेश दे रहा हुँ । वह तेरे मनको कितना भाया यह बता ।।।९७।।

जेसी हुवे तेसी तुं कहिये ।। झूट न चाले कोई ।।
खांडा धार गेल पर बेणो ।। चूका ठोड़ ना होई ।।९८।।

जैसी है वैसी तु मुझे बता । मेरे पास तेरी झूठी एक भी बात चलनेवाली नही है । मेरे साथ तलवार के धार जैसे रास्ते पे चलना है । चलने मे चूक जाणेपर कही भी ठिकाणा नही लगनेवाला है ।।।९८।।

येती बिरा सुणो मन सोही ।। मून पकड़ गह बेंठा ।।
पाछो जाब देवे नहि दुष्टि ।। बिषे पकड़ हुवा सेठा ।।९९।।

अरे मन इतनी देर तक तूने मेरा सतज्ञान का उपदेश सभी सुना और अब तू मौन धारण कर बैठ गया । अरे दृष्ट मन तू वापीस कुछ तो जबाब दे । तू विषय वासना पक्की पकड्कर बैठा है ।।।९९।।

बोल बोल सामी कर बाता ।। क्यां तेरे मन सोबा ।।
मो कुँ बेर बोहोत सी होई ।। पड़े बोहोत बिध रोभा ।।१००।।

तू बोल मेरे साथ बाते कर व तेरा क्या विचार है यह बता । तूझे कहते कहते मुझे बहुत समय हो गया ।।।१००।।

येती बेर ग्यान मे दीया ।। भांत भांत समझाया ।।
तेरे दिल धारणा जेसी ।। कोहो कायनी भाया ।।१०१।।

इतनी देर तक मैने तुझे भांती-भांतीसे सतज्ञान उपदेश दिया । तेरे हृदयमे जैसी धारणा है वह तू मुझे बताता क्यो नही ।।।१०१।।

बोल्या बिना खबर नहि कोई ।। लागा बिना न जाणे ।।
चाख्या बिना साव खट पांचुँ ।। कोहो किसी बिध ठाणे ।।१०२।।

बताये बिना मुझे क्या खबर होगी । जैसे सांधेपे चोट लगे बगर सहे न जानेवाला दर्द समझता नही । पदार्थ चाखे बगैर छःस्वादमेका खट्टा,मिठ्ठा,तुरठ,कडु,फिका या अनुप है यह समजता नही इसीप्रकार तेरे उरमे ज्ञान की चोट लगी या नही तथा ज्ञान का स्वाद आया या नही यह मुझे कैसे समजेगा ।।।१०२।।

बोल बक कर कहो सुणाई ।। पंचा मांय उचारो ।।
कुलडी मांय नहि गुळ गळणा ।। चोर घरे नहि मारों ।।१०३।।

तू पंचो के बिच मे खुल्ला खुल्ला बोल । गुड पाड्ना है तो पंचोके बिच मे पाड्ना व चोर को मारना है तो घरमे अकेले मे नही मारणा सबके सामने मारना ।।।१०३।।

जेसी करे तिसी मन भाको ।। चोडे कहो बजाई ।।
मून पकड़ गकरब नहि छूटो ।। बोल बोल मन भाई ।।१०४।।

तुझे जैसा करना वैसा तू मुझे बता । तू मुझे प्रगट रुपसे कह । तू मौन धारण कर चुपचाप बैठने से तू छुटनेवाला नही । अरे मेरे भाई मन अब तू बोल और बोलकर मुझे बता ।।।१०४।।

तेरे मते जुगे जुग चाल्यो ।। मन भाया सो कीया ।।
अब तो करत लागसी बिरिया ।। ग्यान बिड़ला लीया ।।१०५।।

मै तेरे मत से युग युग से चलता आया । अरे मन तेरे मत को जो अच्छा लगा उसी प्रकार से मै चला । अब तो मै तेरे कहनेसे नही चलुंगा । तेरे कहने से चलने के लिये बहुत

समय लगेगा । बिना सोच समझ से चलने की तैयारी नही है । इस तेरे मेरे लडाई मे मुझे जितने के लिये मैने सतगुरु का ज्ञान धारण किया है ।।।१०५।।

दोहा ।।

अब मन के चरको लग्यो ।। ऊठ गहि सम सेर ।।
अेसो जुग मे कोण हे ।। मोय पकड़ ले घेर ।।१०६।।

मैने ज्ञान का बीडा उठाया है । ऐसा सुनतेही मन को चटका लगा और मन ने उठकर मेरे से लडाई करनेके लिये तलवार उठाई । मन बोला की संसार मे मुझे पकड्कर विषय रस से मना करेगा ऐसा कोई नही है ।।।१०६।।

मै सब कूं गेहे राखिया ।। सुर नर सब ओतार ।।
देहे धार जे ऊपजे ।। चले हमारी लार ।।१०७।।

मैने तो सभी देवता,मनुष्य व अवतार आदिको मुठ्ठी मे पकड रखा हुँ । संसारमे जो जो देह धारण करते है वे सभी मेरे मतके समजसे चलते है । मेरे मतके विपरीत कोई भी नही चलता । ।।१०७।।

चौपाई ।।

अेसा कहो कोण जग माही ।। हम कूं पालण हारा ।।
चवदे लोक बांध मे लीया ।। तीनु देव बिचारा ।।१०८।।

मन बोला मुझे विषय रस लेनेसे मना करेगा ऐसा संसार मे कौन है । तीन लोक चवदा भवन के सभी जीवोको तथा तीन लोक चवदा भवन के नाथ ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को मैने विषय रस लेनेमे बांध रखा है ।।।१०८।।

मो सुं जीत सके नहि कोई ।। सिध साधक सब देवा ।।
जां भेजुं तांकिाल जावे ।। काडुं जुग जुग केवा ।।१०९।।

मेरे से कोईभी जीत नही सकता । सिध्द,साधक व सभी तेहतीस कोटी देवता इनको विषयरस लेनेके लिये जहाँ भेजता वहाँ वे चले जाते है ।।।१०९।।

पीर पैकम्बर तपसी मुनि ।। राकस सब बस कीना ।।
आठु पोहोर हुकम नहि मेटे ।। तन धन हम कूं दीना ।।११०।।

मैने चौबीस पीर,एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर सभी तपस्वी,मुनी और सभी राक्षस इन सबको वश मे कर लिया है । ये मेरे हुकुम मे रात दिन रहते व मेरा हुकुम कभी अमान्य नही करते । इन सबने अपना तन और धन मुझको दिया है ।।।११०।।

लख चोरासी जीव जात सब ।। क्या नर नार कहाणा ।।
मेरे हुकम बिना सब लोई ।। ऊठ पेंड नहि जाणा ।।१११।।

ये सभी चौरांसी लक्ष योनी के प्राणी,मनुष्य,नर–नारी मेरे आदेश के बिना एक पग भी अपने मतसे उठाकर अलग नही जाते ।।।१११।।

लाख कोस परे पुरष पठाऊँ ।। देस बदेसा फेरू ।।

मेरे बस सकळ जग नाचे ।। दावा सबले घेरूं ।।११२।।

मै विषय रस के लिये लाखो कोस के परे पुरुषोको भेजता हुँ । उनको विषय रस के लिये देश विदेश घुमाता हुँ । इस प्रकार यह सारा संसार मेरे वशमे है । मै संसारके लोगो को विषय रस मे जैसे नचाता हुँ वैसे वे नाचते है ।।।११२।।

मो सूं जोर किया नहि जीते ।। आद अंत मे कोई ।।
च्यार दिन कोउ हट कर लो ।। नेहेचे मो बस होई ।।११३।।

मुझसे ताकद लगाकर कोई जितने वाला नही है । आदि से भी जोर लगाया परंतु कोई मुझसे जिता नही व आगेभी जोर लगाये परंतु कोई मुझसे जितेगा नही । जितने को कोई चार दिन हठ करेगा व वह अंतीम मे थक कर निश्चीत ही मेरे वश हो जायेगा ।।।११३।।

मेरे फोज लाव लस्कर हे ।। हंस मदल बिन लेखे ।।
ठाम ठाम पर मेरा थाणा ।। आण कहो कुंण पेखे ।।११४।।

मेरे पास लाव लष्कर की फौज बिनलेखे याने असंख्य है । जगह जगह पर मेरे अड्डे है । इन सभी अड्डोको कोई समज नही पायेगा ।।।११४।।

मो सूं लड़या भिड़या नहि जीते ।। फोज अपर बळ भारी ।।
पाँचु जोध अजीत असे ।। पटक मांड सब मारी ।।११५।।

मुझसे लड्कर,मुझसे भिड्कर कोई भी नही जित सकता । मेरी फौज मेरे से लडनेवालो से अप्पर बल याने भारी बलशाली है । मेरे पांच योध्दा याने पांचो इंद्रीयोके पांचो विषय अजीत याने किसीसे भी जिते न जाणेवाले है । ये संसारके सभी नर नारी,देवी देवता साधु सिध्द को मेरे विरोध मे जाने पे पटक पटक कर मारते है ।।।११५।।

अेसा जोध हमारा पायक ।। जाहाँ भेजूं ताहाँ जावे ।।
सब की आण लाज मा मेटे ।। अपणा हुकम हलावे ।।११६।।

मेरे ये पांचो योध्दा मै जहाँ भेजता हुँ वहाँ जाते है । विषयभोग करने मे किसी को भी लज्जा शरम आती हो या कोई किसीकी मर्यादा पालता हो तो उसकी लाज शरम व मर्यादा मिटा देते है व विषयरस भोगने का आदेश देते है ।।।११६।।

ओर किसी की चले न काई ।। ज्याँ त्याँ जोध हमारा ।।
सब की सुध बुध सो जावे ।। प्रगट मांडे बुहारा ।।११७।।

इनके पाँच योध्दाओके उपर दुसरे किसीका बल नही चलता ये मेरे योध्दा जिस जीव के उपर लढाई करने जाते है । उस जीव की सुध्दी और बुध्दी चली जाती है । और वह जीव प्रगट रुपसे पाँचो विषयोके व्यवहार करता है ।।।११७।।

मेरा जोध सकळ मै दाखुं ।। सुण तुं ग्यान बिचारा ।।
सनमुख होय कान धर भाई ।। इसा जोध हे सारा ।।११८।।

हे ज्ञान मै तुझे मेरे सभी योध्दे बताता हुँ । तू मेरे सामने आकर ध्यान देकर सुण । मेरे

अनेक प्रकार के योध्दा है वे तू सुन ।।।११८।।

काम क्रोध मद मच्छर लोभ रे ।। डिंब पाखंड अंतराई ।।
धेक धाक अग्यान मन मोहो रे ।। बडे गुमर दळ माही ।।११९।।

काम,क्रोध,मद,लोभ,मत्सर,दंभ,पाखंड,द्वेष,धाक अज्ञान मोह ये मेरे फौज मे गुमर है । ।।११९।।

दोहा ।।

आपो चित्त बन तामसी ।। में ते दोन्युं लार ।।
दगो गांढ संग लालची ।। डस डाव सिरदार ।।१२०।।

आपो याने मै पणा,चितवन याने चाहणा तामसी याने रागीटपणा मै और तू ये दोनो दगा गाढ, लालच,डस,डावपेंच,आदि मेरे फौज मे सरदार है ।।।१२०।।

वाद बिरोधी बाकड़ा ।। किबर क्रोधी जाण ।।
मद विवादु संग रहे ।। मुडे. न पाछा आण ।।१२१।।

मेरे फौज मे वाद,प्रतिवाद किबर,क्रोधी,मद विवाद ये सिपाही है । ये सदा मेरे साथ मे रहते है । यह कभी भी हार नही मानते ।।।१२१।।

पांच बाण संग सबळ हे ।। तोख तुपक के लार ।।
कुण जीते को आण कर ।। मो संग ओ बिस्तार ।।१२२।।

पाँच बाण इनके साथ बहुत ही जोरदार है । तोख(गले में बांधने के लिए वजनदार लोहा), तुपक(बड़ी बंदुक)इनके साथ है । तो ऐसे में योद्धाओं से कौन आकर जीतेगा?मन कहता है, मेरे साथ ऐसी फौजों का विस्तार है । ।। १२२ ।।

मेरे जोधा सेंस हे ।। तिण संग बो प्रबाण ।।
आद अंत घर बन मे ।। जीत न जावे जाण ।।१२३।।

मेरे हजारो योध्दा है । उन सबके साथ बहुतही फौज है । शुरुसे लेकर अंततक घरमे या बन मे इस मेरी फौज के योध्दाओ से कोई जित कर नही जा सकता है यह ज्ञान तु समझ ले । ।।१२३।।

चित्ता त्रसना आस ले ।। चडे हमारी लार ।।
दळ पेली भेळा करे ।। देत बोत सिर मार ।।१२४।।

चिंता,तृष्णा,आशा ये मेरे साथ साथ चलती है । ये सभी अपनी अपनी फौज पहले जमा करते है व फिर जिव के सिरपर बहोत मार देते है ।।।१२४।।

निंद्या नासत ना टरे ।। चाय चुगल संग होय ।।
ममता माया कामणी ।। निमक न बिसरे मोय ।।१२५।।

निंदा,चाहणा,चुगल्या खोर ये जीवसे लडने के लिये मेरे साथ रहती है । ममता,माया कामीनी ये जीव से लड्ते वक्त मुझको निमीष मात्र भी भुलते नही ।।।१२५।।

पांच पचीसुं जोध हे || तीन बड़े अमराव ||
अे आगल नर नार मे || जीत न गयो न्याव ||१२६||

पाँच और पच्चीस(प्रकृती)ये मेरे साथ योद्धा है । व तीन ( ) बडे उमराव है,इन स्त्री, पुरूषों में पहले कोई,न्याय से जीतकर गया नही । || १२६ ||

चोपाई ||

मेरी फोज अपार || भाक मै कब लग बरणु ||
के प्रगट के गोप || नाव धरियो के धरणु ||१२७||

मेरी अपार फौज है । मै उस फौजकी बोलके तेरे सामने कहाँ तक वर्णन करु । मेरी कई सेना प्रगट है तो कई गुप्त है । कईयो को नाम रख पाया हु व कईयो का नाम अभी भी रखना बाकी है ।||१२७||

सूतां लेऊँ मार || बोल चाल तड़ा सोई ||
गुपत सेल व्हे बाण || चेत सो सके न कोई || १२८ ||

मै सोते हुये क्या व बोलते हुये क्या सब को मार डालता व चलते चलते भी चेतन से पहले मार डालता । मेरे अनेक गुप्त बाण चलते है । कोई होशियार नही हो सकता जब तक तो उसपे गुप्त बाण चला डालता ।||१२८||

काम क्रोध मद मछर || लोभ अंहकार सरीसा ||
तरक तमो गुण बाद || रीस अग्यान खवीसा ||१२९||

मेरे फौजमे काम ,क्रोध, मद,मत्सर,लोभ,अहंकार,तरकटपणा,तमोगुण,वाद,रागीटपणा, अज्ञान ये खवीसा है ।||१२९||

दोहा ||

अेक बाण सुं मारली || सकळ शिष्ट कूं आय ||
अेसा पाँचु बाण रे || मेरे संग रहाय ||१३०||

मै एक ही बाण मे पुरी सृष्टी को मार डालता हुँ मेरे पास ऐसे ऐसे पाँच बाण है ये सभी बाण मेरे साथ मे ही रहते है ।||१३०||

तीन ताप नव मायली || चवदे छूटा बाण ||
जीत सके कुण जुग मे || करो बात मुझ आण ||१३१||

तीन ताप(अध्यात्म,आदी दैव,आदीभुत)नऊ चौदह बाण छुटते है । संसारमे इनसे कौन जीत सकता? अरे ज्ञान तुम मुझसे क्या बात करते हो ।||१३१||

मन बोले मगरूर मे || गिणत न राखे काय ||
केता जुग मे पच गया || अेक ताप के मांय ||१३२||

मन मगरुर होकर ज्ञान से बोला की ये ज्ञान मै तुझे गिनता ही नही हुँ । इनके सामने तु कहाँ मुजरा है । अरे मेरे एक ही ताप मे संसार मे कितने ही पच पचकर थक जाते ।||१३२||

अेक हमारे दूत सूं ।। पचे अनंता लोय ।।
मो लग को कुण आवसी ।। अेकण जीते कोय ।।१३३।।

मेरे एक ही दूत से अनंत लोग हार जाते है फिर मेरे से लडने के लिये मेरे पास कौन आ सकता है यह ज्ञान तुम बतावो ।।।१३३।।

लाटु बाटु बापड़ा ।। पच पच मरे अेक हाक ।।
मेरे जोधे लोभ की ।। ये सह नहि धाक ।।१३४।।

ये बिचारे बापडे लाटु,बाटू,विनाकारण,नाहक हार खाके मरते है । मेरे एक ही लोभ योध्दा की धाक शुरवीर से शुरवीर भी सह नही सकते ।।।१३४।।

मान सिंग सब घेरिया ।। सुर नर मुनि देव ।।
तीन लोक चवदे भवन ।। करे हमारी सेव ।।१३५।।

मेरा योध्दा मानसिंगने सभी सुर,मनुष्य,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि देव इन सबको घेरकर रखा है । इस कारण तीन लोक चौदा भवन के छोटे से बडे तक सभी मेरी सेवा मे लगे है ।।।१३५।।

राणी मेरे बोहोत हे ।। पट राणी घर आस ।।
सुर नर मुनि जुग के ।। सब गळ घाली पास ।।१३६।।

मेरी राणीयाँ बहुतसी है । आशा यह मेरी पटराणी उससे स्वर्गादिक के सभी देव,सभी ऋषी मुनी,संसार के सभी नर नारी के गले मे अपनी फांसी डालकर रखी है ।।।१३६।।

तूं क्युं डूबे बपड़ा ।। हम सुं तेग संभाय ।।
बडा बड रिख पाडिया ।। सिव सिंगी रिख जाय ।।१३७।।

अरे ज्ञान बापडा तू मेरे से लडनेके लिये तलवार क्यो उठा रहा है । अरे मैने लडाई मे स्त्रिमुख सपने मे भी न देखनेवाले बडे बडे ऋषी जमीन दोस्त कर दिये । मैने राख लगाके रहनेवाला शंकर,पाँचो विषय नष्ट किया हुवा वा श्रृंगीऋषी को भी छोडा नही । उनको भी गीरा दिया । ।।१३७।।

चोपाई ।।

जन सुखराम मन उगताया ।। अब कोहो काहा करीजे ।।
किस बिध सरण पकड़ गहे रहिये ।। नाम किसी बिध लीजे ।।१३८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मेरे मन के सामने मै बेबस हो गया । मुझे क्या करना व क्या नही करना यह सुझ नही रहा । अब किस प्रकार की शरण लेना,नामस्मरण किस विधीसे करना यह समज नही रहा ।।।१३८।।

क्युँ को क्युँ ह कहे मन माही ।। सूतक सूत चलावे ।।
किण सुं जाय कहुँ कोहो केसे ।। मो पत केण न आवे ।।१३९।।

यह मन मेरे अंतर मे अजब ही कुछ कुछ करता है । मुझमे यह मन सूत याने अच्छे विचार

व कसूत याने निच विचार उत्पन्न करता है । अब मै किसके पास जाऊ व जाकर भी क्या कहु यह मुझे समजता नही । मेरे मे क्या हो रहा यह मुझसे शब्दोमे बोले नही जाता ।।।१३९।।

कहियाँ सुण्या बिथा सब जाणे ।। ऊपर करेस कोइ ।।
जन सुखराम बको घर बारे ।। साय गुरां संग होइ ।।१४०।।

मेरी ये पिडा कोई सुनेगा व मुझे इस मनके कष्टसे कोई निकालेगा ऐसा कोई संत है तो मुझे बतावो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की,इस प्रकारसे मै जहाँ वहाँ बोलते छुटा । जहाँ जहाँ गया वहाँ सतगुरु का शरणा ही इस मन के कष्ट से छुडानेकी सहायता करेगा ऐसा बताया ।।।१४०।।

हरिजन कहे ग्यान सब गावे ।। सत्तगुर सम न कहिये ।।
दुख सुख जाय कहे जन आगे ।। फिर सरणा गत रहिये ।।१४१।।

हरीजन याने सभी संतजन बोले की सभी ज्ञान यही कहता है की,इस ब्रम्हंड मे सतगुरु के समान मन को मारनेके पराक्रम मे कोई नही है । यह मन सतगुरु के सामने क्या चीज है । तू अपने सुख दु:ख सतगुरु के शरण मे जाकर सतगुरु के आगे रखो ।।।१४१।।

गुर सुं करो पुकार ।। मार भवसागर तारे ।।
मन केती को बात ।। छिनक मे जुग ऊधारे ।।१४२।।

सतगुरु का शरणा भवसागर के मार से बचाकर तार देनेवाला है । सतगुरु तो क्षणभरमे तीन लोक चौदा भवन का उध्दार कर सकते है । सतगुरु के पराक्रम के सामने मन यह बहुत ही फालतु बात है ।।।१४२।।

जन दीया उपदेश ।। भेव वे मेरे मन भायो ।।
जन सुखिया जब दोड ।। चरण सत्तगुर के आयो ।।१४३।।

मुझे संतोने इस प्रकार का उपदेश दिया । संतोका यह उपदेश मेरे निजमन को पसंद आया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,संतोका यह उपदेश सुणते ही मै दौड्कर सतगुरु के पास गया व उनके चरणोमे जाकर पडा ।।।१४३।।

सत्तगुरा सुं अरजी ।।

सब संता सुं बीणती ।। सत्तगुरा सुं प्रणाम ।।
बिडद तुमारा जान के ।। साय करो हर आण ।।१४४।।

मै सतगुरु को प्रणाम करते हुये सतगुरु और सभी संतोको अर्ज करता हु की,आप आपका ब्रिद याने धर्म जाणकर मेरी सहायता करो ।।।१४४।।

मै खुनी सुं रावळा ।। कोल चूक करतार ।।
रूम रूम बिषते भरे ।। चूका गुन्हा न पार ।।१४५।।

हे सतगुरु सरकार मै तुम्हारा गुनाहगार हुँ । मैने गर्भ मे कर्तार परमात्मा से किया हुवा

करार यहाँ भुल गया था । मेरा शरीर का रोम रोम विषयोसे भरा है । मैने की हुयी गलतीयाँ व गुन्हे पार नही आते इतने है ।।।१४५।।

मेरी करणी देखता ।। मुक्त भवा नहि होय ।।
नरक कुंड मे झूलबो ।। ता मे फेर न कोय ।।१४६।।

मेरी निच करणीयाँ,गलतियाँ,गुन्हे देखते मुझे कभी मुक्ती नही मिल सकती । इन सभी निच करणीयो को देखकर मुझे नर्ककुंड ही मिलेगा इसमे मुझे कोई शंका नही है ।।।१४६।।

मै दुष्टि दावा भरे ।। कीया आळ जंजाळ ।।
पूरब प्रीत पिछाणीये ।। सांई करो संभाळ ।।१४७।।

मै दुष्ट हुँ । मेरे अंदर दावा भरा है । मेरे विकारी मनके कारण मैने बहुतही उलटे सुलटे काम किये । मै आदि मे आपकी ही प्रिती करता था परंतु मन के सुख के दावो से आकर आपको भुल गया । स्वामी आप मेरी पुर्व प्रिती जाणकर मुझे सहायता करो व मुझे संभालो ।।।१४७।।

तुम बिन दुखिया बोत सूं ।। अन्तर दरद अपार ।।
हाथ कमाया काम मे ।। के किस बिध करूं उचार ।।१४८।।

मै आपके बिना बहोत ही दु:खी हुँ । मेरे अंदर अपार दु:ख दर्द है । मैने अपने हाथो से निच कर्म कमाये वे मै किस मुखसे आपके सामने बताऊ ।।।१४८।।

मै कीया मन भावता ।। हर सामी दे पूट ।।
मुंढो किम दिखलाई ।। मै जुग दोनु झूट ।।१४९।।

हे रामजी मैने आपके और पीठ फेरकर मेरे विकारी मन को जो अच्छा लगा वे कर्म किये । मै और मन दोनो झुठे है । सिर्फ मन झुठा नही है मै भी झुठा हुँ । अब मै आपको मुँह कैसे दिखाऊ ।।।१४९।।

मै सोच्यो दिल मांय जुं ।। साम बिना नहि जाग ।।
कीया सोतो कर लीया ।। अब हर चरणा लाग ।।१५०।।

मैने मेरे निजदिल मे विचार किया की,मुझे इन निच कर्मोसे उबरने के लिये स्वामी के अलावा कोई जगह नही है । मेरे से गलतीयाँ होनी थी सो तो हो गयी । अब आगे गलतीयोमे न उलझते मुझे रामजी का शरणा धारणा चाहीये यह मेरा दिल कह रहा है ।।।१५०।।

मन का मता मिटाईये ।। चालो सतगुर बाणं ।।
सबद कहे तिण रीत मे ।। भेळ न दूजो आण ।।१५१।।

मैने दिलसे सोचा की अब मनका मता मिटा देना चाहिये व सिर्फ सतगुरु के ज्ञानसे चलना चाहिये सतगुरुके ज्ञान रितमे मनके विषय विकारोकी रित आनेही नही देनी चाहिये

।।।१५१।।

अरज करे सुखराम ।। दुख दुस्मण को भाखे ।।
सुणज्यो सब नर नार ।। भरम पडदो नकिराखे ।।१५२।।

इस प्रकार से विचार करके मैने सतगुरु के आगे मेरी अर्ज की व मन दुश्मन ने दिये हुये दु:ख सतगुरु को बताये । मैने सतगुरु को मन दुश्मन ने दिये हुये दु:ख सतगुरु को बताते वक्त कोई परदा नही रखा । सतगुरु ही मेरे तारण हार है यह समजकर मैने मुझपे पडे हुये दु:ख कैसे बतावे ये भ्रम मुझमे नही आने दिया । इस जगत मे सतगुरु ही मेरे सब कुछ है ऐसा जाणकर याद कर भोगे हुये दु:ख बोलते गया ।।।१५२।।

सत्तगुर दाद पुकार सुणीजे ।। मनवे मुझ कूं मार्‍या ।।
निस दिन आण मोरचे मंडियो ।। ना हीणे न हार्‍या ।।१५३।।

सतगुरु महाराज आप मेरी दाद पुकार सुनो । इस मनने मुझे बहुत प्रकारसे मारा । यह मन रातदिन भारी फौज के साथ आकर मेरे साथ लडाई करते रहा । लडाईमे वह जरासाभी कभी कमजोर नही पडा या मुझसे वह हारा नही ।।।१५३।।

पाचुँ बाण सबळ बळ तीखा ।। सो मन हाथ संभावे ।।
निस दिन जूंझ करे मन भारी ।। निरख निरख ले बावे ।।१५४।।

इस मनके पास मुझे मारनेके लिये बहुत ही खतरनाक व तिक्ष्ण पाँच बाण है । ये मन ये बाण अपने हाथो मे पकडकर मेरे साथ लडाई के लिये बैठा है । ये मन मेरे साथ रातदिन बहुत भारी युध्द करता है । मुझे मार गिरानेके लिये मेरे उपर निरख परख कर याने मै कैसे मरुँगा इसका विचार कर कर बाण चलाता है ।।।१५४।।

कब लग बाण टाळ मै बच हुँ ।। तीर छेह नहि कोई ।।
चोडे बहे गुपत अध भीतर ।। मार इसी मन होई ।।१५५।।

मै इस मनके बाण टाळ टाळकर कब तक बच सकुंगा इसके मेरे उपर गिरनेवाले तीरो का अंत नही आता । मेरे उपर इस मनके कई बाण प्रगट रुपसे चलते है तो कई बाण गुप्त रुपसे चलते और कई प्रगट रुपके है या गुप्त रुपके है यह भी नही समजता ऐसे अंदर के अंदर न्यारे प्रकारसे चलते है ।।।१५५।।

निस दिन जूझ बूझ मै राखु ।। तरक फरक दिन जावे ।।
करता जतन इसी बिध झूंके ।। लागा पीड़ लखावे ।।१५६।।

मनके रातदिन के युध्द मे मेरे बचनेका मै बहुत ध्यान रखता हुँ । तड्क फड्क मे दिन जाता है । मै मेरा बहुत जतन करता हुँ परंतु यह मन ऐसे ऐसे बाण फेकता है की वे दृष्टीसे दिखनेमे नही आते परंतु ये बाण लगनेपर पिछेसे पीडा होती है ।।।१५६।।

अैसा रोस करे मन फैके ।। बार दुसारुं फूटे ।।
लागे बाण चेतावे मोही ।। सबे आण तब लूटे ।।१५७।।

यह मन रोष कर कर मेरे उपर बाण फेकता है । बार दुसारु फूटे इसके बाण जब लगते है तब मुझे समज आती है । इसप्रकार से बाण मार मारकर मुझे अधमरा करके लुटता है ।।।१५७।।

हिल मिल सकळ भोमिया सारा ।। करत राड़ मन भारी ।।
सबही भीर मीर सब आवे ।। करे दुष्ट सब जारी ।।१५८।।

उसके सारे भोमीया याने पाँच इंद्रीये पच्चीस प्रकृतीयाँ और तीन गुण मुझसे बहुत भारी लडाई करते है । ये सभी मन को साथ देनेवाले धैर्यवान वीर है । ये सभी दृष्ट व व्यभीचारी प्रकृती के है ।।।१५८।।

मन के संग रमे मिल सारा ।। चाय माय सो खावे ।।
मन की डोर सकळ गळ पासी ।। ज्याँ खेचे त्याँ आवे ।।१५९।।

ये व्यभिचारी व दृष्ट प्रकृती के सारे मनके साथी व मेरा मन ये सभी एक साथ मे रमकर इन्हे जो जो विषय रसो की चाहणा उठती है वे सभी विषय रस हिल मिल कर खाते है । मन ने इन सभी भोमीयो के याने पाँच इंद्रीये पच्चीस प्रकृतीयाँ व तीन गुण आदि के गले मे फासी की डोरी बांधी है । वह इन भोमीयो को याने पाँच इंद्रीये पच्चीस प्रकृतीया व तीन गुणोको जहाँ उसकी चाहणा रहती वहाँ खिच ले जाता है ।।।१५९।।

मनके हाजर सकळ हजूरी ।। पाँच पचिस कहीजे ।।
तीनुं जोध सकळ सिर नायक ।। कहे किसी बिध रीजे ।।१६०।।

ये सभी पाँच इंद्रीये पच्चीस प्रकृतीया तीन गुण मन के हजूरी मे हाजर रहते है । ये सभी सिरनायक याने एकसे बढकर एक जबर योध्दे है । इनके मारसे मै कैसे बचते रहुंगा ।।१६०।।

अेके लडू दूसरो उठे ।। तीजो आण ग्रासे ।।
चोथो आण मार दे भीतर ।। ओर अनेकुं पासे ।।१६१।।

एक से लडता हुँ तो दूसरा लडने खडा हो जाता है । दूसरे से लडता हुँ तो तिसरा आकर मुझसे लडनेके लिये भिड जाता है और चौथा न समजते ही मेरे अंदर घुसकर मुझे मारता है इसप्रकार मन के पास लडाई करनेवाले अनेक है ।।।१६१।।

अेसी मार मरम तन मांही ।। कही सुणी नहि जावे ।।
थर हर कंप तन सब धूजे ।। चाय जहाँ ले आवे ।।१६२।।

वे ऐसी आंतरीक भर्मकी मार मारते है की वह मार बाहर उपर किसीको दिखाई नही पडती दिलके अंदर ही अंदर यह मार लगती । यह मार किसीको कहते सुणाते नही आता इन मारसे मेरा शरीर थर थर काँपकर धुजने लगता । ऐसे अवस्था मे मुझे मेरा मन उसे जहाँ चाहत रहती वहाँ ले जाता ।।।१६२।।

चोरी करे झूठ मन बोले ।। तस्कर करे पयाणा ।।

तिरिया संग रमे महलन मे ।। निस दिन अेह भयाणा ।।१६३।।

मेरा मन विषय विकारो के पुर्तीके लिये चोरी करता,झुठा बोलता और व्यभीचार करने मे क्या गलत है ऐसा जगतके ज्ञानी लोको के सामने तर्क–वितर्क करने भी चला जाता । वह विषयोमे पगला होकर अपने महल मे रहकर रातदिन विषय भोगमे स्त्रि के साथ रमता ।१६३।

ओरां ठगे आप मन जीते ।। अे मन डाव बिचारे ।।
बरजु बोहोत रहे नहि कोई ।। सुणो इऊँ मन मारे ।।१६४।।

यह मन मेरे सभी ग्यान,ध्यान,विवेक,मर्यादा को ठगता व अनेक प्रकार के डाव डालकर मुझे जितता मै उसे बहुत ही सक्त मना करता तो भी वह मेरे सक्त मनाई को नही धारता । इस प्रकारसे मेरा मन मुझे अनेक प्रकार मे ठग कर मारता ।।।१६४।।

लेखा करे कसर सोजे ।। ज्याँ त्याँ जाय लड़ावे ।।
तामस माय तमो गुण छेडे ।। इऊँ मुज अेब पडावे ।।१६५।।

यह मेरा मन कौडी कौडी का हिसाब करता व जरासी भी कौडीया मिलने मे कोर कसर रही तो उस कोर कसर को खोजता व जहाँ तहाँ जाकर कौडी कौडी के लिये मुझे लडाता तामस मे आकर मुझे झगडा कराता व मैने हिसाब नही लिया तो मुझे हिसाब लेने को जबरदस्ती करता ऐसे ऐसे प्रकारसे मेरी सबके सामने आबरु लुटता ।।१६५।।

दावा करे बुराई बंधे ।। कड़वा बेण कहाडे ।।
बरज्यो रहे नहि गुर दात्ता ।। मै बोलत सम पाड़े ।।१६६।।

यह मन मुझसे दावा करता और जहाँ तहाँ जाकर मेरे पल्ले बुराई बांधता । मुझे जहाँ वहाँ कड्वा बोलने लगाता । ऐ मेरे सतगुरु दाता ऐसा करनेसे यह मेरा मन मेरे मनाई करनेपे जरासाभी रुकता नही । मेरे मना करते ही वह पलटकर मेरे मनाई के उपर खिजता व मुझे यह मनाई गलत है ऐसा उलटा जबाब देता ।।।१६६।।

बनसो जाय पाहाड़ घर कीजे ।। रहुँ इकंतर जाई ।।
छाडे नहि संग मन मेरो ।। घेर लहे छिन माई ।।१६७।।

मै इस मनके लिये जहाँ परिंदा भी नही पहुँच पाता ऐसे बनमे जाकर पहाडपर घर करता व इनसे पिछा छुटे इसलिये एकांत मे जाकर बास करता तो भी यह मेरा मन मेरे संग रहना छोड्ता नही । यह मेरा मन मै जहाँ जहाँ जाता वहाँ वहाँ मेरे साथ चलता पिछे रखने पे भी पिछे रुकता नही मुझे ऐसे एकांत मे भी घेर लेता व मुझे समझेगा नही इतने कम पलमे विषय रस मे ले जाता ।।।१६७।।

घर मे आण बेठ रहुँ खूणे ।। चोहटे कदे न जावे ।।
देही पड़ी रहो छो पाछे ।। तो मन जुग फेरावे ।।१६८।।

मै इन मन से छुटकारा पानेके लिये घर रहकर एक कोने मे बैठता व इसके भय से

जरासाभी बाहर नही निकलता फिर भी यह मन मेरे शरीरको कोनेमे बैठके रहने देता मात्र वह मुझे संसार मे घुमाता रहता ।।।१६८।।

सपने मांय दिसंतर डोले ।। मार मोह संग कीया ।।
दुख सुख त्रास देत सिर भारी ।। जाय बिषे रस पीया ।।१६९।।

यह मेरा मन सपनेमे मुझे विषयरसके देश विदेश घुमाता । कभी मार दे देकर साथमे फिरने मजबुर कराता तो कभी मुझसे मोह लगा लगाकर देश विदेश साथमे फिराते रहता । यह मेरा मन विषय रस पिनेके लिये मेरे सिरपर अनेक प्रकारके मार देता दु:ख देता त्रास देता व मजबुर करके विषय रस पिने लगाता तो कभी मुझे सुख देकर विषय रस पिने जाता ।।।१६९।।

मून पकड़ देखी हम सोई ।। मुख सूं कहुँ न काई ।।
तोई आण मन मुझ मारे ।। दुख सुख सबे लखाई ।।१७०।।

मेरा मन मुझे भारी मार मारता यह मैने किसी को भी नही बताते मौन रहके देखा मैने कभी मुख से किसी को इसके मार के बारे मे कुछ भी नही बताया फिर भी मेरा मन आ आकर मुझे मारता है । उसके मारनेका सभी दु:ख दर्द मुझे मालुम पड्ता है ।।।१७०।।

अंतर मार इसी बिध मारे ।। बाहर लखे न कोई ।।
झीणी मार रात दिन मार ।। कीस बिध रहुँ सोई ।।१७१।।

यह मेरा मन विषय रसके गुप्तरुपसे ऐसे मार मारता की वे लगे हुये मार बाहर किसी ज्ञानी ध्यानी नर नारी को दिखते नही । यह मेरा मन मुझे रातदिन भांती भांती के झिनी मार मारते रहता । अब मै इससे बचकर कैसे रह सकता ।।।१७१।।

अब बेठा मून संभाय ।। नाँव की लगन लगाई ।।
बिन करणी करतार ।। बात मानुं नहि काई ।।१७२।।

अब मै मौन धारण कर बैठ गया और रामनाम स्मरण करनेकी लगन लगा दी । अब मै कर्तार राम के शिवाय दूजे किसी की बात मानना बंद कर दिया ।।।१७२।।

नेहेचल राख सरीर ।। ध्यान करणे कूं बेठा ।।
मन लेगो प्रदेस ।। जाय बिषया घर पैठा ।।१७३।।

मैने शरीर को निश्चल करके कर्तार का ध्यान करने बैठ गया । ध्यान मे भी मेरा मन मुझे परदेश ले गया व परदेश मे जाकर विषयोके घर घुस गया ।।।१७३।।

कीया सबे सवाद ।। भोग पाँचु रस खाया ।।
नाना बिध प्रकार ।। मन ले बोहोत बताया ।।१७४।।

परदेश जाकर मेरे मन ने नाना विधीके पांचो विषयोके रस खाये व मुझे ध्यान मे अस्थिर कर वे सभी प्रकारके रस दिखाये ।।।१७४।।

जब पाँचु भै भीत ।। होय घेच्यो मुज ताई ।।

भली बुरी के बीच || जाय मेल्यो न मांई ||१७५||

मनके जोरसे मेरी पाँचो ज्ञान इंद्रीये भयभीत हो गये व मन के पाँचो विषय इंद्रीयोने मुझे घेर लिया व मुझे अच्छे बुरे की बिच ले जाकर विषय रस मे डाल दिया |||१७५||

मेरे बस मन नाय || काहो अब कीजे कोई ||
मै चाऊँ सो बात || हुण देतो हे नाई ||१७६||

यह मेरा मन मेरे वश रहा नही । बताओ अब मै मेरे ऐसे मन का क्या करु । मै विषयरस से निकलकर ज्ञान विज्ञान रस लेने का जो उसे कहता हुँ तो वह मेरा मन लेना नही चाहता । ||१७६||

किण पै करूं पुकार || दुख मेरा अे गाऊँ ||
को अेसा जग मांय || ताय मै सरणे जाऊँ ||१७७||

अब मै किसके पास जाकर पुकार करु? मै मेरे दु:ख किसके सामने जाकर बोलु? ऐसा संसारमे कौन है उनके शरण मे जाकर मै रहुँ ? ||१७७||

कियो ग्यान बिचार || समझ देख्यो जुग जाई ||
सत्तगुर सम नहि सरण || ओर अेसी जुग माई ||१७८||

मैने सतज्ञान से विचार किया व सतज्ञान आँखोसे संसार मे देखा तो समजा की सतगुरु के शरण समान दूजी शरण जगत मे कोई नही है । मतलब मन के इन दु:खो को निवारने के लिये सतगुरु यही शरण है |||१७८||

कीजे जाय पुकार || चरण गेहे सरणे रीजे ||
मन घेऱ्या मुज जाय || खबर गुर बेगी लीजे ||१७९||

मेरे निजदिलने सतगुरुके चरण पकडकर मुझे सतगुरु की शरण लेने को सतगुरुकी पुकार करने को कहाँ व कहने को कहाँ की अे मेरे मनने मुझे विषय रसोमे बुरी तरह लपेट कर घेर के रखा इसलीये गुरु महाराज आप मेरी खबर जल्दी लो व मुझे मेरे दृष्ट मन से बचावो । ||१७९||

बोहो बिध मन सुं हट कर || निस दिन कहुँ बजाय ||
मेरी अेक न माने हे || बिषे हळाहळ खाय ||१८०||

मैने मेरे मनके विरोधमे बहुत प्रकारसे हट्ट कर,तो कभी प्रेमसे बता बताकर रातदिन समजाया फिरभी मेरा मन मेरा सतज्ञान जरासाभी न मानते विषयरस रुपी जहर खाते रहा |||१८०||

तुम सुणज्यो हर साईयाँ || मन उपराधी लुण्ड ||
करे करावे आपले || मो सिर देवे भुण्ड ||१८१||

हे सतगुरु साईयाँ,हे रामजी यह मेरा मन बुरी चाल चलनेवाला व बताये जैसा न करनेवाला अपराधी लौंडा है । ये स्वयम् निच कर्म करता व मुझे मजबुर कर मुझसे भी

कराता और उन निच कर्मोके बदनामी का ठिकरा मेरे सिरपर फोड्ता ।।।१८१।।

मै जब बेसूं ध्यान मे ।। ओ घर रहे न कोय ।।
तां को अब मै क्या करूं ।। भेद बताओ मोय ।।१८२।।

मै जब ध्यान मे बैठता तब वह ध्यान घरमे नही बैठता बल्की विषय विकारोमे फिरता । हे सतगुरु स्वामी ऐसे निच मन का अब मै क्या करु इसका मुझे भेद बतावो ।।।१८२।।

तम सरणागत केसवा ।। राखो राम बिचार ।।
मन माया जुग मोहनी ।। करती हे मुज खवार ।।१८३।।

हे केशवा हे सतगुरु रामजी आप मुझे आपके शरण मे रखो । ये मन व माया विषयरस मे मोहीत करणेवाले निच है व ये माया व मन मेरा खराबा कर रही है ।।।१८३।।

सरणे सरम से कोय ने ।। पड़ती हे नर जाण ।।
जन सुखिया ब्रिहन हक हे ।। हर मुज छोडो आण ।।१८४।।

जगतमे कोई किसी भी मनुष्य के शरण मे आया तो शरण देनेवाले को शरण लेने वालोकी लाज रहती है । शरण लेने वालेने जिस कारण का शरणा लिया उस शरणका फल उसे लगना चाहीये ऐसा शरण देनेवाले को सदा लगता है । आदी सुखरामजी महाराज कहते है की इसीप्रकार मेरे बिरहनी ने याने आत्माने आपका शरणा लिया है । अब रामजी आप मुझे इस दृष्ट मन व माया से छुड़ावो ।।।१८४।।

आप बिन कदे न छूट सूं ।। मेरा जोर संभाळ ।।
अप मन माया मोह ले ।। मो गल घाले जाळ ।।१८५।।

मै तुम्हारे बिना मेरे बलसे या किसी और के बलसे कभी छुट नही सकता व मै मेरे जोर पे मन के विषय विकारोके सामने टिक भी नही सकता । यह मेरा अपमन याने विषय विकारोमे लंपट हुवा वा मन व माया मुझे विषयरस मे मोहीत कर मेरे गले मे विषय रस के फाँसी का फंदा डालते रहते ।।।१८५।।

साधु जोड़ के त्याँर हुँ ।। अब मन घेरूं न ओर ।।
अप मन माया कामणी ।। मुज डारत किस ठोर ।।१८६।।

अब मै सतगुरु का साधू होनेको तैय्यार हुँ । अब मै मेरे विषय विकार छुटनेके लिये मेरे विकारी मन को अधिक ज्ञान दे के घेरणा नही चाहता सतगुरु का शरणा लेने कारण अब मेरा अप मन माया व स्त्रि विकार मुझे विषय विकारोमे कैसे डाल पायेंगे ।।।१८६।।

दाता ऊपर कीजिये ।। मो दुबेल को आय ।।
मन मनसा दिढ राख हो ।। ये हर जीता जाय ।।१८७।।

हे सतगुरु दातार मै दुर्बल हुँ व मेरा अपमन व माया मंछा मेरेसे बलवान है । हे रामजी ये मुझे जीत जाते है इसलीये आप मुझे इनसे बलवान करो मजबुत करो ।।।१८७।।

तुम सब सारा बरणिया ।। काम क्रोध अेंकार ।।

अे मुज कूं बो मार दे ।। छिन छिन पळक बिचार ।।१८८।।

हे रामजी आपनेही ये काम,क्रोध,अहंकार बनाये है । ये आपके बनाये हुये काम,क्रोध,अहंकार मुझे बहोत मार देते है । ये हर क्षण क्षण हर पल पल मुझे मारते ही रहते है ।।।१८८।।

तुम कीया सो साईयाँ ।। मुज मार्‍या किम जाय ।।
साय करो सरणे गहो ।। अब हर सील पठाय ।।१८९।।

ऐ स्वामी,ये(काम,क्रोध,अहंकार) ये सब तो,तुमने ही बनाया है । तो वे अब मुझसे कैसे मारे जायेंगे ?(तुम्हारा बनाया हुआ,मैं कैसे मारूँ?)मेरी सहायता करो । और मुझे शरण में लो । अब हर(रामजी)शील(कामशांती)भेजिए । ।।१८९।।

समता धीरज सो दीजिये ।। निवण खिवण दे राम ।।
दर्शण देई प्रसण हुवो ।। मो सब सारो काम ।।१९०।।

हे रामजी मुझे समता दो धिरज दो नम्रता व सहनशीलता दो । ये मुझे देनेसे मनने बनाई हुयी विषमता,विषयरस भोगनेकी अधिरता,विनम्रता क्रोध आदि मन कितना भी चाहा तो भी मुझसे लडाई मे जीत नही सकेंगे । हे रामजी मुझपर प्रसन्न होकर आपके दर्शन मेरे घटमे दो ।१९०।

जुग जुग सारे रामजी ।। सब संतन के काज ।।
भीड़ पडे तारे सही ।। तम मोठे महाराज ।।१९१।।

हे रामजी आपने मेरे पहले हुये वे युगो युगो मे सभी संतोके कार्य पुरे किये । वैसे मेरा भी कार्य सारो । पहले जब जब भी संतोके उपर भीड पडी है याने संकट पडे है तब तब उन संकटोसे आपने ही उन संतोको तारा है । उन संतोके समान आज मुझे भी तारो । हे रामजी आप ही संतोको संकट से उबारने के लिये बडे महाराज है ।।।१९१।।

तेरी भक्त संभाय के ।। डूबो सुण्यो न कोय ।।
मो पर किरपा न भई ।। क्या ओगण मुज होय ।।१९२।।

हे रामजी आपकी भक्ती धारण करनेवाला आजतक कोई भी डुबा नही यह मैने संतो के ज्ञान ध्यान से सुणा है । फिर मेरे उपर आप की कृपा क्यो नही हुयी इसका क्या कारण?क्या मेरे मे कोई अवगुण है इसलिये आप कृपा नही कर पाये ।।।१९२।।

सरणे आया रामजी ।। क्या सिर देवे मार ।।
तुम तारो तब ही तिरे ।। नहि जुं जोर हमार ।।१९३।।

हे रामजी आपके शरण आने के बाद किसी के सिरपर मार नही पडता परंतु मेरे सिरपर अभी भी मार पडता है तो मुझमे क्या अवगुण है की आप आपका शरणा नही दे रहे हो । हे रामजी आप जब तारोंगे तभी मेरा तरणा होगा मेरे मे भवसागर से तिरने का बल नही की मै अपने

बलसे तिर जाउँगा ।।।१९३।।

खोटा खरा न परख हो ।। क्या कस तावे मोय ।।
तुम ही घडणे हार था ।। मुज क्या दोसण होय ।।१९४।।

हे रामजी मै खोटा याने विषय लंपट हु या सच्चा ज्ञान विज्ञानी बनना चाहता हुँ ये मेरी परिक्षा आप कृपया मत लो । अब मेरे से इस मनका जरासाभी ताव सहे नही जाता इसलिये मै सच्चा हुँ या झुठा हुँ इस आपके परिक्षा का ताप मुझे मत होने दो । मुझे आपने ही घडाया है उसमे मेरा क्या दोष है ? मै खोटा हु तो भी आपका ही बनाया हुवा हुँ व सच्चा हु तो भी आपका ही बनाया हुवा हुँ ।।।१९४।।

तुम कीया तुमने घड़या ।। तुम ही तोलण हार ।।
मो मन क्या को दोस हे ।। सांई करो बिचार ।।१९५।।

हे रामजी आपने ही मुझे व मेरे स्वभाव को घडाया है व आज आपही मेरे खोटे खरे गुण को तोलनेवाले हो । इसमे मेरा मन का क्या दोष है इस बात का साई आप ही बिचार करो ।।।१९५।।

तुम राखो ज्युँ रामजी ।। रेणो या जग माय ।।
निज मन निमख न बीसरे ।। धन मन ओ तन जाय ।।१९६।।

हे रामजी आप मुझे जिस तरह से रखोंगे उसी प्रकारसे तो मुझे रहना है । ये मेरा निजमन तो तुम्हे पलभर भी नही भुलता है । भले ही यह मेरा शरीर कही चला जाय । भले ही यह मेरा धन चला जाय । भले ही यह मेरा निजमन आपको पलभर भी नही भुलता ।।।१९६।।

मन सू राड़ ।।

मन सुं करूं बिगाड़ ।। हेत राखुं नहि कोई ।।
जुग जुग ठगियो मोह ।। गांठ सारी सब खोई ।।१९७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अब मैने मेरे मनसे विरोध लिया हुँ व अब मै उससे किसी प्रकारकी प्रिती नही रखता । इसने मुझे युगान युग से ठगा है व मेरी ज्ञान गठडी लुटी है ।।।१९७।।

कियो निपट कंगाल ।। हुवाल पाड़या मन मोमे ।।
डाव बण्यो अब आय ।। उलट पाडुं सब तो मे ।।१९८।।

इस मनने मुझे बहुत ही ज्ञान कंगाल कर दिया है । ज्ञान मे इस मनने मेरी बहुत ही हालत खराब कर दी है । अब उससे निपटकर उबरनेका मेरा डाव आया है । अरे मन युगान युग से जैसे तुने मेरी हालत की वैसी ही मै भी तेरे उपर उलटकर तुझे न बर्दास्त होनेवाली तेरी हालत करुंगा ।।।१९८।।

गळ मे जडुं जंझीर ।। हात हत कडियाँ देहुँ ।।
जेर बंध सूं मार ।। कूट गेले अब लेहुँ ।।१९९।।

अब मै तेरे गले मे जंजीर बांधूगा व तेरे हाथो मे हथकडीयाँ डालुँगा । तुझे चाबुक से मार मार कर कुट कुट कर ज्ञान रस्तेपे लाउँगा ।।।१९९।।

हमसे करी निराट ।। बोहोत तै घात बिचारी ।।
पेली दे सुख दिन ।। नरक कूं कियो तियारी ।।२००।।

तुने मेरे साथ बहुत प्रकारके घात किये है । पहले तुने मुझे विषय रस के सुख दिये व उन भोग के बदले नरक मे भेजने की तयारी की ।।।२००।।

कहयो न मानुं तोह ।। उलट सिर मार दिराऊँ ।।
तो फीटे की लार ।। समझ नरका क्युँ जाऊँ ।।२०१।।

अरे मन अब मै तेरा बताया हुवा कुछ भी नही सुनुंगा । अब मेरे उपर उलटकर मेरे सतगुरु से तेरे सिरपर मार देने लगाउँगा । तु फिटाळ है । मुझे सतगुरु ज्ञान समजने के बाद मै तेरे पिछे नर्क को क्यु जाउँगा ।।।२०१।।

सुण मन ग्यान पुकार केह हे ।। आद अंत की बाता ।।
सूनी हाट चोर घर फोड़े ।। धणी जहाँ नहि जाता ।।२०२।।

अरे मन सुण सतगुरु ज्ञान पुकार कर आदिसे अंततक की बात कह रहे है । जिस दुकान या घरका मालीक दुकान या घर मे नही है ऐसे दुकान या घर को चोर फोड्कर लुटते है परंतु जहाँ दुकान व घरका मालीक है वहाँ चोर कभी नही घुसते ।।।२०२।।

चोर जार जो बो बळवंता ।। डाव घाव हुवे माही ।।
सनमुख धणी साहासुं मिलिया ।। गरज सरे नहि काई ।।२०३।।

अरे मन चोर व व्यभीचारी ये दोनो बहुत बलवान भी रहे व उस चोर व व्यभिचारी मे अनेक डाव घाव की चतुराईयाँ भी रही तो भी चोरी करते वक्त चोरके सामने धनमाल का मालिक आ गया या व्यभिचार करने के तयारी जाने वक्त स्त्रि का पती दिख गया तो उस चोर व व्यभिचारी की कोई गरज नही सरती इसप्रकार मेरे सतगुरु बलवंत होने कारण मेरी मुझे विषयरस मे डालने की गरज पूर्ण नही होगी ।।।२०३।।

जे तम जोध अपर बळ भारी ।। फोज बोत तुम सागा ।।
जुगे जुग में चोर कहाणा ।। साहा कहुँ नहि बागा ।।२०४।।

अरे मन तु भारी बलशाली योध्दा है करके जाणे जाता है । और तेरे पास फौज भी भारी है । फिर भी तुझे युगो युगोसे चोर ही कहते है,साहुकार कोई नही कहता ।।।२०४।।

सूता ठगे मुसे तुम जावो ।। धणी नहि जाहाँ जोरा ।।
रांड रंडोली लाटु बाटु ।। हीण राज जाहाँ चोरा ।।२०५।।

ठग कोई भी बेसमझमे रहा तो उसे ठग सकता है । जो तुझे समझकर तुझसे होशियार रहता है वह तुझसे ठगे व मारे कैसा जायेगा । जैसे व्यभिचारी स्त्रिका पती नही है वहाँ जोर चलता है परंतु स्त्रिका पती है भलाही वह दुर्बल है व व्यभिचारी पुरुष तनसे व धनसे

बहुत बलवान है फिर भी उस व्यभिचारी पुरुषका उस स्त्रिपे जोर नही चलता । ऐसे व्यभिचारी पुरुषका जहाँ रांड रंडोल्या रहती,निरस स्वभावकी लाटू बाटू स्त्रिया रहती वही जोर चलता । इसप्रकार जिस राज का राजा हीन याने प्रजाका माल लुटनेवाला है वही चोरो का कार्य सफल होता ।२०५।।

चोर राड सनमुख किण कीवी ।। फोज बांध कब जीता ।।
छांने छूरके मार खात हो ।। जुगे जुग युँ बीता ।।२०६।।

अरे मन आजदिन तक किसी चोरने आमने सामने आकर लडाई की है । कौनसे चोरने लडनेके लिये फौज तैयार की है व जाकर राजदरबारमे राजके साथ लडाईकी है । चोर तो छुप छुपकर हाथ मारते खाते रहता । युगानयुग से चोरोने लुक छीपकर ही चोऱ्या की व धन मिलाया । ।।२०६।।

सुण मन ग्यान तोय समजावे ।। राज ब्रम्ह को भारी ।।
आण मिलो बेगा दळ माही ।। नहि तर होय खवारी ।।२०७।।

अरे मन मेरा ग्यान सुन व तु समझ । अरे मन सतस्वरुप ब्रम्ह का राज बहुत ही भारी है । सतस्वरुप ज्ञान मन को कहता है की तू विकार रसका अज्ञान त्यागकर सतस्वरुप ज्ञानी बन जा व जल्दी आकर हमारे दल मे मिल जा नही तो तेरी बहुत खराबी होगी ।।।२०७।।

जागे धणी चोर रिसाया ।। गरज सरे नहि काई ।।
ताते आण मिलो दळ माही ।। समज समज मन भाई ।।२०८।।

चोरी करनेके लिये चोर गया परंतु चोर वहाँ पहुँचते ही धनी जाग गया । चोर चोरी करनेमे असफल हुआ इसलिये चोर मालिक पर क्रोधीत हो गया तो भी उस चोरकी चोरी करने की गरज पुर्ण होती नही । ऐसेही तु मेरेपे क्रोधीत हुआ तो भी तेरी विषय रसकी गरज पुर्ण नही होगी । अरे मन तु हमारे ग्यान दलमे आकर मिल जा । अरे मन तु मेरी यह बात समज । ।।२०८।।

किसबण पुरष सीस नहि धाँरे ।। जाय मन मान्यो सो खावे ।।
पुरष सीस जुग नार सवागण ।। तहाँ कहो कुण जावे ।।२०९।।

जो वेश्या है उसके उपर एक पती कभी नही रहता उसके वहाँ जिसके मन मे विषय भोग करने की चाहणा होती वे सभी वहाँ जाकर विषय रस भोगते । परंतु जो सुहागीन याने जिसके सिरपर पती है वहॉ विषयरस भोगने कोई कभी नही जाता यह समज ।।।२०९।।

रोही खेत बाग बन बाड़ी ।। धणी छत्ता नहि तोड़े ।।
सूनो खाय जाय रूळयारूँ ।। कोहो आण कुण मोड़े ।।२१०।।

जंगल,खेत,बाग बन बाडीया इनमे यदी मालिक रहा तो कोई उस जंगल,खेत,बाग बन बाडीयाँ को तोड नही सकता । रखवाली करनेवाला जिस जंगल,खेत,बाग बन बाडीयाँ मे नही है वहाँ उस जंगल,खेत,बाग बन बाडीयाँ मे घुस घुसकर प्राणी व मनुष्य तोड्कर खाते

। ऐसे जिस स्त्रि को पती नही है और स्त्रि बुरे चाल चलनेवाली है उसके घर व्यभिचारी जाता व विषय रस खाता ।।।२१०।।

गोफण पकड़ धणी ज्याँ बैठा ।। खाय सक्यो कुण जाई ।।
हिलियो जाय पडे जे मनवा ।। मार पडे सिर माई ।।२११।।

परंतु जहाँ गोफण हाथ मे पकड्कर मालिक बैठा है वहाँ कौन जाकर खा सकता । अरे मन सबको हिलीयो हुवा वहाँ जायेगा तो उसके सिरपर मार पडेगी ।।।२११।।

मै तुज कहुँ समज कर रेणा ।। अगली बात मा जाणो ।।
धणी बिना किया ज्युँ लीया ।। अब अेसी मत ठाणो ।।२१२।।

ज्ञान बोला,अरे मन,मै तुझे समझता हुँ वह समझ व समझकर वैसे रह । अरे मन तु पहले जैसी बात थी वैसी ही बात है यह मत जाण । जब मालिक नही था तब तुने तुझे जो जो अच्छा लगा वह वह कर लिया परंतु अब तु वैसे ही बात रही यह मत जान ।।।२१२।।

पात साहा बिन राज सबन को ।। घर घर हुवे ठुकराई ।।
जग कूं लाट लूट सो लेवे ।। बार बुंब नहि काई ।।२१३।।

जहाँ बादशहा नही है वहाँ टुटे फुटे का भी राज्य चलता है । ऐसे राजमे घर घरमे ठकुराई चलती है । ऐसे राजमे छोटे छोटे ठाकुर बादशहा बनकर संसार के लोगोको लुटते है । बादशहा का कानुन राज न होने कारण इन लुटनेवालो की कोई धरपकड भी नही कर सकता ना लुटे गये लोगोको कोई न्याय मिलता ।।।२१३।।

जब लग धणी संभाळ न कीवी ।। तब लग राज जमाया ।।
अब सीर धणी पातसाहा जागो ।। राव पाय सब आया ।।२१४।।

अरे मन जबतक धनी याने बादशहा ने संभाला नही तबतक इन ठाकुरो ने बादशहा बनकर राज जमाया जैसेही सिरपर बादशहा जाग गया वैसे ही इस बादशहा के चरण मे ठाकुर आ गये । इसप्रकार तु भी सतज्ञान के शरण मे आजा ।।।२१४।।

हुकम चल्यो पातसाहा ।। ओर की दस्त न काई ।।
जे सिर काढे कोय ।। जड़ा सुं देव बगाई ।।२१५।।

अब बादशहा का हुकूम चलने लगा व टुटे फुटोकी राजाशाही खतम हो गयी । अब यदी कोई लुटेरा प्रजा पे सिर उपर करता तो बादशहा उसे जडसे उखाड्कर फेकने मे देर नही करता । ।।२१५।।

बड़ा बड़ा अमराव ।। भूप सुं भूप सवाया ।।
पात साहा बिन समझ ।। जे जगत के मांय कहाया ।।२१६।।

बडे बडे उमराव व सवाई से सवाई राजाये राजमे बादशहा न होने कारण प्रजा पे राज जमाते परंतु बादशहा प्रगटते ही इन सभी उमराव व राजाका राज नष्ट हो जाता ।।।२१६।।

युँ तम कीया राज ।। नाम खावंद बिन सोई ।।
ओ मन करो बिचार ।। ग्यान दीया मै तोई ।।२१७।।

इसीप्रकार तुमने मेरे पे राज किया तब मेरे साथ मेरा नामरुपी मालीक नही था । परंतु अब मेरे साथ नाम मालिक है यह मन तु विचार कर व समझ । मैने तुझे जो हकीगत है वह बताई । ।।२१७।।

भिन भिन कहुँ बिचार ।। ग्यान हेला दे जाऊँ ।।
जे तुम नहि इतबार ।। ब्रम्ह की फोज बताऊँ ।।२१८।।

ज्ञान बोला,मै तुझे भिन्न भिन्न तरीकेसे समज पडेगी ऐसा समझाकर ज्ञान बता रहा हुँ । फिर भी तेरा विश्वास नही आ रहा तो तुझे सतस्वरुप ब्रम्ह की फौज बताता ।।।२१८।।

दोहा ।।

हम बिष्टाळे बोहो फिऱ्या ।। अेक न मानी आय ।।
हम मन सूं निर्दोस हो ।। कई न माने काय ।।२१९।।

ज्ञान बोला,मै मन को चेताने के लिये मन के साथ बहुत फिरा । परंतु मन ने एक भी बात मेरी नही मानी । इसलिये अब मै मन से निर्दोष हुँ । यह मन मेरा बताया हुआ ज्ञान जरासा भी नही मानता ।।।२१९।।

तेरा कीया भुगती ।। सुण मन सह सरीर ।।
हम निर्दावे दोस बिन ।। चंडा ब्रम्ह का भीर ।।२२०।।

ज्ञान बोला,अरे मन तेरा किया हुआ तु ही भोगेगा । अरे मन तेरे किये हुये कर्मोका भोग इस शरीर को सहन करना पडता । मैने तुझे ज्ञान बता दिया । मैने तुझे ज्ञान बताया नही यह दोष या तेरा दावा मेरे पे नही रहा । अब मै ब्रम्ह के ज्ञान फौज मे सामिल हुआ । मै ब्रम्ह का पक्ष पकड्कर विकारी कर्मो पे ब्रम्ह के फौज के साथ चढाई करुँगा ।।।२२०।।

चोपाई ।।

पुरब जन्म बिचार ।। ब्रम्ह सो प्रीत पिछाणी ।।
मो अबळा की भीर ।। जोध मेल्या हर जाणी ।।२२१।।

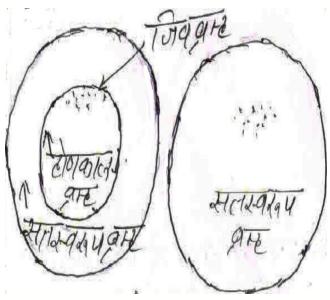

सतस्वरुप ब्रम्ह ने पुर्व जन्मका याने एकदम आदिका विचार करके याने यह जीव आदिमे सतस्वरुप ब्रम्ह मे ही था व मेरेसे प्रिती थी परंतु मनके उकसाने से यह जीव मुझसे निकलकर माया मे गिरा व मनके आधिन हुआ यह मेरी पुर्व प्रिती पहचान कर व आज मेरी अबला स्थिती देखकर रामजीने मेरी सहाय्यता करनेके लिये तेरे से लडनेके लिये मेरे साथ योध्दे भेजे ।।।२२१।।

बड़े ग्यान अमराव ।। आण ऊभा दळ माही ।।
सीळ साच संतोष ।। भेद बिचार कहाई ।।२२२।।

ये मन तू सुन रामजीने तेरे से लडने के लिये मेरे साथ अनेक भारी भारी योध्दा भेजे है ।

उन योध्दाओमे बडे बडे ज्ञान उमराव है । ये उमराव तेरे से लड्नेके लिये सबसे आगे खडे है । ये ज्ञान उमराव मन के सभी बडे बडे भ्रम उमराव को मुलसे नष्ट करानेवाले है । यह ज्ञान उमराव जीव के घट मे महारस ज्ञान प्रगट कर पाँचो विषयरसोके परेका महा आनंद जीव को देते है । इस आनंद से जीव को पाँचो रस जो सच्चे सुखदायी दिख रहे थे वे भवसागरके दु:खमे डालनेवाली अस्सल महादु:खदायी है यह ज्ञानसे दिखता है व आज तक पाँचो रसका सुखदायी दिखनेवाला आनंद सदा सुख देता है व दु:ख नही देता है यह जब्बर भ्रम मुलसे नष्ट हो जाता है । इस ज्ञान योध्दा के साथ सील,साच,संतोष,भेद, विचार ऐसे ऐसे जबरे योध्दा मन से लड्नेके लिये रामजी ने जीव के दल मे खडे किये है ।

सील–योध्दा यह मन के व्यभिचार योध्दा को मार गिराता है वह सील योध्दा सभी छोटी बडी नारीयाँ माता बहन है यह ज्ञान घटमे उपजता है व मनके व्यभिचार योध्दा को खतम कर देता है ।

साच–याने सत्य व निष्कपट बोलना यह योध्दा मनके झुठ व कपट योध्दा को जमीनदोस्त करता है । साच याने विश्वास योध्दा यह अविश्वास योध्दा को मार गिराता है । यह योध्दा रामजी जैसे पलभरमे सृष्टी को मिटा सकते है वैसे वे रामजी मेरे घटमे प्रगट हो जाने पे मेरे मन को भी क्षण मे सदा के लिये खतम कर दे सकते है यह विश्वास पैदा करता है । ऐसे रामजी प्रगट करा देनेवाले सतगुरु अरु बरु मिलने पे भी यह मन जीव को उस सतगुरु को रामजी का रुप न मानने देते मनुष्य के समान मनुष्य है ऐसी समज करा देते है व सतगुरु के प्रती अविश्वास पैदा कर हंस को भवसागर मे डुबा देता है । यह विश्वास योध्दा इस मन के अविश्वास योध्दा को सतगुरु के मुखसे ज्ञान सुनकर सतगुरु मनुष्य नही है बल्की घटमे रामजी प्रगट करा देनेवाले सच्चे परमात्मा के रुप है यह विश्वास प्रगट करा देता है । जिससे मन का अविश्वास योध्दा खतम हो जाता है ।

संतोष–योध्दा मन के लोभ योध्दाको मिटाता है । जीव को मानव तन मिला वह भी भारत देश मे मिला वह भी रामजी के संत भुमी मे मिला व रामजी के कृपासे संत सतगुरु मिले । लक्ष चौऱ्यांशी योनी कट गयी व मै सतस्वरुप के देश पहुच गया यह संतोष मिलता है । इस कारण जीवके साथ न चलनेवाला अरबो खरबो का धन,राजा बादशहा का राज धन ब्रम्हा, विष्णु, महादेव,इंद्रादिक का देवादिक तक का धन झुठा है तथा मिट्टी मोल दिखता है । यह संतोष मन के लोभ योध्दा को सफाचट कर देता है ।

भेद–यह भेद जीव को माया व सतस्वरुप इन दोनो देशके सुखोका फरक बताकर मनके विषयरस के सुख कैसे झुठे है,नरक मे डालनेवाले कैसे विकारी है यह ज्ञान देता है । इस ज्ञान भेदसे जीव को विषय रस से ग्लानी आती है व विषय रसके सभी स्वाद झुठे लगते है । इस कारण जिव विषय रसके सभी सुख त्याग देता है ।

विचार–जब मन को विषय रस देनेवाली अनेक प्रकारकी पांच रसोकी माया की खुषीयाँ

खेलती है व संसारके सभी दु:ख दुर रहते है । कभी निकट नही आते तब इस मनको उसके समान जगत मे कोई नही है तथा सभी जगत मुझसे तुच्छ है ऐसा निच अहंकार उसमे प्रगट होता है । यह विचार योध्दा जीव को विवेक देता है व यह विषयरस व जोर जवानी चार दिनोकी है व अंतीम मे जिवको दगा देकर नरक मे कैसे ले जानेवाली है यह समजकर योध्दा अहंकार को खतम करता है ।।।२२२।।

सुध बुध समता प्रेम ।। प्रीत विग्यान पधाऱ्या ।।
खिवण निवण बो पीड़ ।। संगत जरणा सब जाऱ्या ।।२२३।।

अरे मन रामजीने तेरे विरोध मे सुध्दी बुध्दी,समता,प्रेमप्रित,विज्ञान,आदि को तेरेसे शुरवीरतासे लड़नेके लिये दल मे सामील किये साथ मे सहनशीलता,नमन बोपीड(नम्रता) सतसंगत जरणा ऐसे अनेक योध्दा भी दल मे सामील हुये है सुध्दी बुध्दी ये योध्दाये मन के क्रोध व काम इन योध्दा ओको मारकर दफन करने लगे । समता योध्दा ने त्रिगुणी मायाने कम ज्यादा धन बुध्दी राज आदि मायाके द्वारा फैलाये हुये विषमता को मार गिराया । यह समता योध्दाने हर जीव मे अखंडीत सुख देनेवाला बलवान साई सरीखा है यह ग्यान प्रगट कर दिया है । योध्दा प्रेमप्रित ने सतगुरु से प्रेमप्रित लगा कर घटमे राम प्रगट करा दिया है व सभी हंस रामजी के ही है यह ग्यान प्रगट करा कर आपसका द्वेश मत्सर खतम कर दिया । इसप्रकार प्रेमप्रितने मनके मत्सर द्वेश योध्दा को खाक कर दिया है ।

योध्दा विज्ञान–यह मन के अज्ञान योध्दा को समाप्त कर देता है ।

योध्दा नम्रता–मन के अहंकार योध्दा को मार गिराता है ।

योध्दा सतसंगत–मन के सतगुरु से बेमुख होने के कुबुध्दी योध्दा को मारकर रसातल मे भेजता है ।

योध्दा जरणा– क्रोध योध्दा को जडसे सफाचट करता है ।

भाव चाव चित त्याग ।। बिरह बेराग सरीसा ।।
लगन डोर ले जाण ।। ग्यान उजियागर बीसा ।। २२४ ।।

दलमे भाव,चाव,चित्त,त्याग,विरह,बैराग,लगन डोर आदि योध्दे अपनी अपनी फौज लेकर दलमे सामिल होकर मन के योध्दाओसे लढ रहे है व मनके योध्दाओको खतम कर रहे है।

योध्दा भाव–साधू जगत के सरीखा मनुष्य ही है यह कोई प्रगट राम नही है यह कुभाव योध्दा मारता है ।

साधू की चाव–साधू की चाव यह योध्दा घटमे आनंदपद प्रगट कर झुठे मायाके विषय सुखोकी चाहना रखनेवाले चाव योध्दा को राख मे मिलाता है ।

योध्दा ग्यान चित–चुगली करनेवाले हलके चित्त को मारता

योध्दा त्याग–मनके मोह ममता योध्दा को मारता है ।

साहेबसे बिरह योध्दा–यह कुल परिवार धन राज आदिसे उपजने वाले बिरह को मारता है।

सतबैराग योध्दा –ब्रम्ह विष्णु महादेव ने बनाये हुये मोह योध्दा को मारता है ।

साहेब की लगन डोर योध्दा–स्त्रि चरीत्र के विषय भोग लगन योध्दा को खतम करता है।२२४।

ध्यान धरम उपगार ।। ओर की नीजमन ------

----------||----------

केहे निस दिन रटिये राम ।। अप मन माया मोहले ।।

ऊठ जगावे काम ।।-------।।२२५।।

ध्यान,धर्म व उपगार निजमन कहता है,कि रात–दिन राम नाम रटना,अपमन,माया,मोह उठकर काम जगाता है । ।।२२५।।

।। इति मन की राड ग्रंथ संपूरण ।।